नंगी आवाज़ें

सआदतहसन मंटो

नाट्य रूपांतर :
जितेन्द्र मित्तल



संभावना प्रकाशन, हापुड़-२४५१०१

मूल्य : 16 00

नंगी आवाजें, © जितेन्द्र मित्तल, प्रकाशक : संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, हापुड़-245101, प्रथम संस्करण : 1984, आवरण : करुणानिधान, मुद्रक : हरिकृष्ण प्रिंटर्स, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली-32

NANGI AWAZEN *by* JETENDRA MITTAL
First Edition : 1984 Price : 16.00

उस जननी को
जिसे मैंने हमेशा
चिन्तित देखा

पत्र व्यवहार का पता :—
जितेन्द्र मित्तल,
333, फूल बाग,
लखनऊ।
फोन कार्यालय—43729
42792

रूपान्तरकार की कलम से

साहित्य में रुचि बचपन से ही रही है परन्तु आज मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है कि जुलाई '79 से पहले मैंने मन्टो को क्यों नही पढ़ा, शायद इसका कारण मन्टो पर लगे आरोप रहे हो ? इसे एक घटना ही कहा जाएगा कि मैं अपने मित्र मधुकर चतुर्वेदी के घर एक आवश्यक कार्य से गया था, वहा मुझसे इन्तजार करने को कहा गया। ड्राइंग रूम मे बैठे-बैठे मेरी निगाहे समय गुजारने के लिए बुक सेल्फ पर घूमने लगी। यन्त्रवत् हाथ चले और मेरे हाथ मे एक कहानी सग्रह था 'काली सलवार'। इसके बाद मुझे पता ही नही चला कि मुझे इन्तजार करते हुए एक घन्टे से भी अधिक हो गया है। सम्मोहन की वह अवस्था उस समय टूटी जब मेरे मित्र ने आकर सॉरी कहा, परन्तु मुझे उस वक्त उनका वहा आना अच्छा नही लगा। कुछ पल औपचारिक बातें करने के बाद और उनसे वह पुस्तक लेने के बाद मैं सीधा अपने घर अपनी स्टडी टेबिल पर जा पहुचा।

'काली सलवार' सग्रह को पढ़ने के बाद लगा कि मेरे अन्दर कोई ऐसी चीज घुस गई है जो लगातार मुझे काट रही है, छील रही है। आज मैं नही बता सकता कि मैंने कितनी बार उन कहानियो को पढा था। हा उस सग्रह को पढने के बाद मेरे अन्दर एक आग-सी जल गई थी और वह थी मन्टो को जान लेने की, पहचान लेने की। मगर अफसोस कि पुस्तकालयो मे और बुक कारनर्स मे, लखनऊ जैसे शहर में भी मन्टो नही मिल पाया—सिवाय एक आध छुट-पुट संग्रह के। मैं अक्सर अपने परिचितों से पूछता कि उनके पास मन्टो की कोई रचना तो नही है। मैंने कबाड़ियों की दुकानो के चक्कर लगाने शुरू किए, जहाँ कि पुरानी पत्रिकाएँ मिलती हैं। उन पत्रिकाओ मे एक आध कहानी मिल जाती तो बड़ा सुकून मिलता। इसी बीच मुझे दो और संग्रह मिल गए पहला था 'टोबा टेकसिंह' और दूसरा 'मम्मी' मगर मुझे लगता

कि लोग मन्टो के नाम को 'कैश' करना चाहते है क्योकि तीनो ही संग्रहों में लगभग वही रचनाएँ देखने को मिली।

उस समय मैं 'भूखी स्थितियाँ' का निर्देशन कर रहा था। अचानक मुझे यह ख्याल आया कि मन्टो को मच पर प्रस्तुत किया जाए। आज मैं यह कह सकता हूँ कि यह ख्याल अपने आप में अत्यन्त ही खतरनाक था क्योकि मन्टो ने जिन्दगी के जिन नाजुक पहलुओ को छुआ है, उनको बहुत बारीकी के साथ झेला है और उसमे उसके व्यक्तिगत अनुभवो की बू आती है। उसकी किसी भी रचना के साथ जुडने के लिए आवश्यक है कि पहले तो उसकी दृष्टि के साथ तादात्मय बैठाया जाए। उसके विस्तृत दृष्टिकोण, छोटे किन्तु तीखे सवादों के मर्म को समझा जाए। दूसरे उसके विषय और पात्रो का अत्यन्त ही विवादास्पद एव सत्य के निकट होना। मन्टो एक शब्द, एक सवाद मे जो कह जाता है वह किसी दूसरे के लिए कहना असभव तो नही दुष्कर अवश्य है।

यह ख्याल मुझ पर भूत की तरह सवार होकर काली सलवार, मम्मी मोजेल, नया कानून, ठण्डा गोश्त, बू, खुशिया पर टिकता हुआ 'नंगी आवाजें' पर आ लगा। परिणामत 'भूखी स्थितियाँ' का निर्देशन रोक देना पडा। मन्टो को महसूस करने के लिए, उसकी किसी रचना के साथ जुड़ने के लिए, आवश्यक है कि उसके पात्रो के साथ, खुद को जोड़ देना। जिन्दगी के अनुभवो को 'रीकॉल' करने का सिलसिला शुरू हुआ तो दस-बारह साल पुरानी छोटी-छोटी घटनाओं को 'स्क्रीन' पर पुनः देखने जैसी प्रक्रिया शुरू हो गई। असल समस्या थी कि मुझे उन लोगो की जिन्दगी के बारे मे मन्टो के कथ्य को फैलाना था जिनसे मेरा खास वास्ता नही रहा। बार-बार लिखता, कल्पना के घोडे दौडाता और असतुष्ट होकर 'रिजेक्ट' कर देता। एक दिन साइकिल पर सड़क से गुजरते समय अत्यन्त कर्कश आवाज सुनकर ठिठक गया। देखता क्या हूँ? सड़क के किनारे, बाँसो के टुकड़ो पर टिकी, टाट और पोलीथीन के टुकड़ो से बनी झोंपड़ियों की एक कतार। एक झोपड़ी के बाहर एक क्षीणकाय स्त्री नाममात्र के गुदड़ो मे अपने शरीर

को ढँके एक पुरुष को कोस रही थी। उस स्त्री की बातो से मालूम हुआ कि वह उसका जुआरी, शराबी और निठल्ला पति है। मुझे लगा कि मुझे अपने नाटक का विस्तार मिल गया है। फिर तो सुबह शाम घन्टो उस बस्ती के किनारे एक चाय की छोटी-सी गन्दी दुकान की टूटी बैन्च पर बैठा रहता।

दूसरी समस्या आयी भाषा की, सवादों की। जिस तबके के चरित्रों का वर्णन मैं कर रहा था उनकी भाषा को ज्यो का त्यो पेश करता अमर्यादित लगा। काफी सोच-विचार के बाद इस नतीजे पर पहुँचा कि बात उनकी, सवाद अपने व सहजता उनका देना होगा अन्यथा गलत हाथो में पड़कर यह नाटक अश्लीलता की एक मिसाल कायम कर देगा। कह नही सकता कि मेरा यह निर्णय कहाँ तक उचित था।

कहानी को नाट्य में परिवर्तित करने मे मैंने अत्यन्त ही स्वतन्त्रता ली है परन्तु 'फ्रेम' को ध्यान मे रखते हुए। जैसे भोलू की पत्नी धन्नो व हरिया कहानी मे नही है परन्तु नाटक में है। पात्रों के नामो मे परिवर्तन भी मैंने अपनी सुविधानुसार किया है।

इसका प्रथम मंचन मेरे मित्र श्री गोपाल मिश्र ने किया था। उन्होने इस रचना को एक बिल्कुल अलग तरह से देखा, मैं मंचन मे साथ था परन्तु एक निर्देशक की सीमा मे अतिक्रमण स्वभाववश न कर पाया, परिणामतः नाटक के प्रदर्शन से पूर्व ही मुझे लगने लगा था कि कहीं कोई कमी रह गई है जिससे नाटक का कथ्य मर रहा है और उसके स्थान पर शराबख़ाने के दृश्य नाटक पर हावी होते जा रहे है। अतः मैं उसके मंचन के बाद भी उसमें काँट-छाँट करता रहा। सच बताऊँ 'नंगी आवाज़ें' के रूपान्तर ने मुझे बता दिया कि मन्टो जैसे कथाकार की रचना के साथ खिलवाड़ नही किया जा सकता है। नतीजतन यह रचना पाँच बार पुनर्लेखन की प्रक्रिया से गुज़रने के बाद आपके हाथो मे है। कह नही सकता कि उस महान कथाकार की रचना के साथ कहाँ तक न्याय कर पाया हूँ—निर्णायक आप है।

मैं रंगकर्मी श्री आशुतोष अवस्थी का शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होने उसे बहुत मेहनत और लगन के साथ निर्देशित किया। साथ ही मैं अपने मित्र श्री अशोक अग्रवाल का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझ जैसे संघर्षरत रंगकर्मी के कार्य को आप तक पहुँचाने का जिम्मा लिया।

—जितेन्द्र मित्तल

333, फूलबाग,
लखनऊ-226001
दि० 18-7-82

निर्देशक का वक्तव्य

अक्सर हम सडक से गुजरते हुए, फुटपाथ पर सोए हुए आदमी को देखते हैं और बगैर ध्यान दिए आगे बढ़ जाते हैं। उस व्यक्ति या उसकी परिस्थितियों को जानने की न हम कोई कोशिश करते हैं न ही उसकी कोई जरूरत महसूस करते है परन्तु यदि कोई कहानीकार या कवि उसी व्यक्ति को देखे तो उसके देखने का अन्दाज कुछ दूसरा ही होता है और फिर वह उसकी परिस्थितियों मे अपनी कल्पना का सम्मिश्रण करके जो चित्र सामने रखता है वह सभी के दिमागों की नसें तडका देने के लिए काफी होता है, और तभी समाज मे बस रहे अन्य व्यक्ति उन हालातों से अवगत हो पाते हैं।

कुछ ऐसा ही एहसास मुझे 'नंगी आवाजें' पढने के बाद हुआ था क्योंकि अक्सर सड़क के किनारे किसी फटी धोती का तम्बू बनाकर उसमें निवास करते हुए लोगो को तो मैंने देखा था लेकिन उनकी हालत कैसी है और किस रूप मे वे गुजर करते हैं इससे मेरा परिचय नही था, इस नाटक को पढने के बाद ही मैं जान पाया कि क्यो उन लोगो के बडे बच्चो की गोद मे छोटे बच्चे सोते है और क्यो सडक के किनारे उनके चूल्हे जलते हैं, जिन पर बनने वाली रोटियाँ शायद उनके पूरे परिवार के लिए पूरी नही पडती ? और तभी कहीं विचार आया कि मेरी ही तरह सुविधा-सम्पन्न जीवन व्यतीत कर रहे प्रत्येक व्यक्ति को यह जानकारी होनी चाहिए कि लोग इन हालातो मे भी जीते हैं, जहाँ बाहरी दुनिया से अपने 'पति-पत्नी' जैसे नाजुक सम्बन्धो की गोपनीयता रखने के लिए भी कोई पर्दा उपलब्ध नही है।

मेरे लिए यह नाटक एक चुनौती के रूप मे आया क्योकि जहाँ एक ओर निर्देशक के रूप मे यह मेरी प्रथम प्रस्तुति थी, वही दूसरी ओर इस बात का ध्यान रखना भी आवश्यक था कि मूल सन्देश कही अन्य वस्तुओं

मे खोकर जनता तक पहुँचने से न रह जाए और इसे मैंने एक चुनौती के रूप मे ही स्वीकारा। नाटक करते समय सीमित साधनों को भी विचार मे रखना आवश्यक था और इसके लिए ऐसे विकल्प खोजे गये जो नाटक की रोचकता मे कही भी बाधक न बनें।

नाटक की कथावस्तु के अनुसार ऐसे दृश्यबन्ध की आवश्यकता थी जो दोमंजिला हो, जिसमे ऊपर की मजिल मे तो गामा के भाई की छत और अन्य मोहल्ले वालो के घर की छतो और उनमे चलने वाले कार्यकलापों को दिखाया जाए और नीचे अन्य दृश्य दिखाए जाएँ परन्तु धनाभाव के कारण इस प्रकार के सेट का निर्माण असम्भव था अत. इसके विकल्प में जो दृश्यबन्ध बनाया गया उसमे स्तरों (levels) का प्रयोग किया गया और छत को दिखाने के लिए लकडी के तख्तो को प्रयोग मे लाया गया।

पीछे यानि कि 'अप स्टेज' का हिस्सा छतों के रूप में दिखाया गया और उन्ही छतो पर बाँस व टाट की सहायता से टाट के दड़बों का निर्माण किया गया जो नाटक का मूलभूत आधार है और आगे यानि कि 'डाउन स्टेज' मे नाटक के अन्य दृश्य जैसे मदिरालय और गामा की शादी इत्यादि को दिखाया गया और इस प्रकार कम खर्च मे मचन करना सम्भव हो सका।

प्रस्तुति में सगीत को पूरी तरह जीवन्त रखा गया था। और कही भी टेप रिकार्डर का प्रयोग नही किया गया सिवाय एक जगह के जहाँ छत पर लेटा गामा विभिन्न आवाज़ों के बारे मे सोचता है, बाद के दृश्यों मे गामा के कानों मे पडने वाली 'नगी आवाजो' को भी कोरस के माध्यम से प्रदर्शित किया गया और उन्ही की आवाज के उतार-चढाव के अनुरूप गामा की प्रतिक्रिया होती है।

एक दृश्य मे जहाँ गामा अपनी शादी के बाद पहली बार पत्नी को लेकर अपने 'नवनिर्मित टाट के दडबे' मे जाता है, गामा और उसकी पत्नी को 'स्पाट-लाइट' में रखकर, दूसरी छत पर उन्हे उत्सुकता से देख रहे लोगों को अंधेरे मे रखा गया, उन लोगो की उपस्थिति का ज्ञान तभी होता

है जब उनमें से कोई बीड़ी सुलगाने के लिए माचिस जलाता है या अपने साथी के कान मे कोई बात कहकर हँसता है, गामा पर इनकी उपस्थिति की प्रतिक्रिया दिखाने के लिए उसे एक गजरा दिया गया था जो वह अपनी पत्नी को भेंटस्वरूप देना चाहता है परन्तु हर बार उसके हाथ किसी की आहट सुनकर रुक जाते हैं और अन्त मे भल्लाकर वह गजरा तोडकर फेंक देता है, *जो उसके वैवाहिक जीवन के बिखराव का द्योतक था और यह* प्रदर्शित करता था कि अपने अरमानों के हार को उसने स्वयं ही तोडकर फेंक दिया है, साथ ही यह अन्तर मे उसके टूटने का भी प्रतीक था।

मगर प्रस्तुति के दौरान अनेक दृश्य, हास्य-दृश्य बनकर सामने आए, ख़ासकर वे दृश्य जिनमें भोलू और घन्नो आमने-सामने होते हैं, इनमें घन्नो के चरित्र को पूरी तरह से अपने पति पर हावी दिखाया गया जिसके सामने उसका पति जबान खोलने की हिम्मत नही कर सकता और जिस समय उसकी पत्नी उसकी गोद मे बच्चा पटककर कहती है—'लो सम्भालो अपनी अमानत, मैं तो चली मायके', उस समय भोलू की दयनीय दशा और चेहरे के भावो से जो हास्य की सृष्टि होती है उसका आनन्द सभी ने उठाया।

एक निर्देशक के रूप मे इस प्रस्तुति का चयन करने का कारण भी यही था कि मुझे लगा कि इसके द्वारा मनोरजक ढंग से दर्शकों तक अपनी बात पहुँचाई जा सकती है और यह सामान्य ढंग से कही गई बात भी उन्हें कही कुछ सोचने को विवश कर सकती है, साथ ही यदि जनसंख्या के सन्दर्भ मे भी सोचा जाए तो समस्या पूरी तरह से सामयिक है और सीधे उन लोगो से जुड़ी है जो एक कमरे में पूरे परिवार को लेकर गुजारा करते है और जहाँ पति-पत्नी के सम्बन्धों को भी कोई किसी प्रकार की गोपनीयता का आवरण नही मिलता और यदि वे बेशर्मी का लिबास नही ओढते तो उनके लिए जीवित रहना कठिन है और यदि कोई विरोध करने का साहस करे तो 'गामा' की परिणति को प्राप्त होता है। मेरी दृष्टि मे 'गामा' उसी 'मानसिकता और विरोध' का प्रतीक है जो इस वर्ग में पनप रही है और वह अपने इर्द-गिर्द मकड़ी के जालो की तरह छाए 'टाट के पर्दों' को उखाड़

कर फेंक देना चाहता है जिनके धागो मे फँसकर उसकी जिन्दगी उलझती जा रही है, जिसमे जकड़े जाकर उसके सगी-साथी स्वय को असहाय समझते है और ये टाट के टुकड़े ही उनकी पहचान बनकर रह जाते हैं।

इसी पहचान को मिटाने की ही लडाई गामा लड़ता है। यही वजह उसे दूसरों से हटकर सोचने के लिए विवश करती है और तभी अन्य व्यक्तियो की उपस्थिति की कल्पना मात्र से वह अपनी पत्नी को पत्नी का अधिकार देने मे असमर्थ रहता है। वे आवाजें उसे, न होते हुए भी विचलित करती रहती है जो उसकी दृष्टि मे नगी आवाजें हैं और जिनका सुनना उसे असह्यकर है, वे उसके कानों के पर्दों को फाड़ते लगती हैं, दिमाग की नसो मे उतरकर उसे ऐसा महसूस कराती हैं मानों उसके मस्तिष्क मे किसी ने बारूद भर दिया हो और जो किसी भी वक्त फट सकता है। तभी वह चीख उठता है—'नही ऽऽ।' और स्वय से ही कहता है—'यह पागलपन नही है'।

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि सुधीजनों ने इस प्रयास को सराहा और दर्शकगण प्रस्तुति के मूल सन्देश को अपने साथ ले जाने मे सफल रहे।

—आशुतोष अवस्थी

नंगी आवाज़ें

कल्लन, मकसूद, राधू, जगली एव गामा शादी की खुशी मे शराब पीते हुये

कालू एव घन्नो छत पर सोने के लिये झगडा करते हुये



अन्तिम दृश्य मे धन्नो एव भोलू साथ मे बच्चा हरिया



अन्तिम दृश्य मे गामा के पागल होने से पूर्व पड़ोसियो द्वारा पीटा जाना

इस नाटक का मचन 13 अप्रैल 1982 को 'खोज' द्वारा बाल रवीन्द्रालय, लखनऊ मे हुआ।

मंच पर

गामा	—	जितेन्द्र मित्तल
जगली	—	जितेन्द्र त्रिवेदी
राधू	—	कृष्ण कुमार
कल्लन	—	विजय खरे
मकसूद	—	रजी सिद्दीकी
फ़ौजी	—	विश्वनाथ मेहरोत्रा
भोलू	—	जी० सी० निगम
धन्नो	—	रीता
राजकली	—	नाहिद जमाल
अन्य	—	आशा, शालिनी, राजुल, मजू सूरी

पार्श्व में

मच व्यवस्था	—	कृष्ण कुमार, जे० एच० रिजवी
रूप सज्जा	—	पी० के० राय चौधरी
वेष भूषा	—	मजू सूरी, आशा
मच निर्माण	—	रजी सिद्दीकी, जितेन्द्र त्रिवेदी
पोस्टर	—	देबू भट्टाचार्य
जनसम्पर्क	—	राका
संगीत परिकल्पना एव गायन	—	अश्विनी मक्खन, आतमजीत सिंह व राजीव नागर
ध्वनि प्रभाव	—	मौविक चक्रवर्ती
दृश्य बंध	—	पी० के० राय चौधरी
प्रकाश	—	एम० हफीज
सह निर्देशन	—	रीता

निर्देशन—आशुतोष अवस्थी

दृश्य बन्ध

यह नाटक स्वयं में प्रतीकात्मक है। इस कारण रियलिस्टिक सेट्स का प्रयोग कठिन साध्य है। अत. विभिन्न लेविल्स को प्रयोग करते हुए फॉर्मलिस्टिक सेटिंग रखनी है। नाटक में दीनू का भटियारखाना व छत दो महत्वपूर्ण लोकेल्स हैं।

दीनू का भटियार खाना—बिना किसी प्रॉपरटीज़ का प्रयोग किए मच के अग्रभाग मे बायी विंग्स की तरफ एक लेविल द्वारा दिखाया जा सकता है।

छत—छत नाटक मे अत्यन्त महत्वपूर्ण लोकेल है इसके लिए मंच का ऊपर का सारा भाग साइक तक छोटे-छोटे लेविल्स में प्रयोग करना उचित होगा। प्रारम्भ में गामा की छत को छोड़कर अन्य सभी छत्तों पर टाट और बांस की मदद से बने दडबे दिखाए जाते हैं। दृश्य पाँच मे विंग्स मे विलीन होता हुआ भोलू का दडबा दिखाया जाता है। दृश्य सात मे गामा अपने लिए दडबा तैयार करता है।

कोठरी—गामा व भोलू के घर के दृश्य को दिखाने के लिए मंच के किसी भी स्थान पर निर्देशक एक स्पॉट लाइट से काम चला सकता है।

इसके अतिरिक्त बाज़ार और बारात के दृश्यो मे समस्त मच को प्रयोग करना उचित होगा।

पहला दृश्य

[मच पर मद्धिम प्रकाश होता है]
[नेपथ्य से समवेत् स्वरो मे]

गजाननम् भूत गणादि सेवितम्,
कपित्य जम्बू फल चारु भक्षणम्,
उमा सुतम् शोक विनाशकारकम्,
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ।

[श्लोक समाप्त होते-होते नाटक के सभी पात्र मंच पर आ जाते हैं]

कार्य शुरू करने से पहले कहे अगर श्री गणेश,
दूर होय सब विघ्न आप ही कट जायें सब क्लेश ।
सुमिरन करके परमेश्वर का, सुमरों आदि शारदा माय,
देखो कहानी एक गामा की, दर्शक गण अब चित्त लगाय ।
गामा भी ये वो है गामा, औरत जात जिसे नही भाय,
घूमत खात मस्त अलबेला, खाय पिए और मौज उड़ाय ।
ये है कहानी उस गामा की, औरत थी जिसे जान बवाल,
और जो चाहो पूछ लो उससे, पर पूछो न यह सवाल ।
अब हम नही कहेंगे कुछ भी, आगे जो है उसका हाल,
अब तो बस दिल थाम के देखो, गामा और उसका हाल ।

[अन्तिम पक्ति को दोहराते हुए सभी पात्र चले जाते हैं स्वर व प्रकाश मद्धिम होने के बाद समाप्त हो जाते हैं]

[प्रकाश होने पर दीनू के भटियारखाने का दृश्य । समय लगभग रात्रि आठ बजे । जंगली मोची, कल्लन धोबी, गामा

कलईगीर, राधू लुहार तथा मकसूद दर्जी आदि बैठे शराब पी रहे है। मकसूद गामा का चमचा है, अक्सर वह गामा की ही शराब पी जाता है। आज भी वह गामा के साथ बैठा उसी की बोतल से पी रहा है। गामा व मकसूद के आगे कुल्हड रखे है, जबकि अन्य लोग एल्मिनियम के टेढे मेढे बदशक्ल गिलासों से पी रहे है।]

[भटियारखाने के लिए उपयुक्त शोर गुल मिश्रित संगीत। जगली अपना गिलास खाली करके फर्श पर रखता है। चुप्पी उसे परेशान करती है। अचानक उसकी दृष्टि गामा के आगे रखी दारू की बोतल पर पड़ती है]

जंगली : (व्यग से) क्यो बे गामा, आजकल सफेद पर उतर आया है ?

गामा : (गामा पहले जगली को देखता है, बोतल उठाकर देखता है फिर अफसोस से) हॉ यार, क्या करूँ ? आजकल धन्धा बडा मन्दा चल रहा है, औरतें बडी चालाक हो गई हैं। कहती हैं बडी महँगाई है, जैसे महँगाई बस उनके लिए है और हमे तो सरकार फोकट में खाने को देती है।

मकसूद : ठीक कहता है गामा, साली जम्फर की सिलाई मे भी महँगाई घुस गई है।

गामा : और तो और जबसे यह स्टील के बर्तन चले हैं तबसे हम कलईगीरो की तो ऐसी-तैसी हो गई है। सवेरे से शाम तक चीखते घूमो तब कही जाकर पॉच-छह रुपये मिल पाते है।

कल्लन : अबे मकसूद, आजकल तेरा भाई दिखाई नही देता, क्या पीनी छोड दी है ?

राधू : आजकल, बेचारा जोडने मे लगा है। नईम की लौंडिया ने चॉदी के कडे मांगे हैं। साली कहती है, जब चॉदी के कडे देगा, तब तुझसे ब्याह करूँगी।

गामा : ये मरद भी उल्लू के पठ्ठे होते हैं। साली ये भी कोई बात

हुई, अपना तन-पेट काटकर कड़े बनवाओ वो भी चाँदी के, तब महारानी ब्याह करेंगी जैसे कोई अहसान करेंगी !

[यह देखकर कि किसी पर कोई प्रतिक्रिया नही हो रही है जोर से]

अरे, औरत फाँसी का फन्दा होती है। बल्कि फाँसी से भी ज्यादा, फाँसी तो एक बार लग जाए, बस छुट्टी !

[अचानक देखता है कि मकसूद कल्लन से इशारे से कह रहा है कि दिमाग का एक-आध पेच ढीला है। नशे में लड़खड़ाता हुआ उसके पीछे पहुँचकर उसके गले मे पड़े इन्चीटेप को पकड़ कर खीचता है। मकसूद खुद को बचाने की कोशिश करता है]

ये साली फांसी तो ज़िन्दगी भर गले मे लटकती रहती है।

[अपने बचाव के चक्कर में मकसूद कल्लन के ऊपर गिर पड़ता है]

कल्लन : (प्रतिक्रिया स्वरुप) अबे चुप बे, साला जब देखो औरतों की बुराई करता रहता है—औरत ये, औरत वो। अबे लंडूरे तू क्या जाने औरत क्या चीज़ होती है ?

मकसूद : (प्रतिक्रियास्वरुप) वाह, वाह क्या बात कही कल्लन ! काम से वापस लौटने पर अगर घरवाली घर मे न मिले तो घर फाड़खाने को दौड़ता है।

राघू : (जंगली से) कुल मिला कर हम गरीबो का दिल बीवी से ही तो बहलता है। (गामा से) भाई गामा, उन लोगो की बात दूसरी है जो बड़े लोग हैं, जिनके पास दिल बहलाने के हज़ारो रास्ते हैं।

कल्लन : वो तो और भी ज्यादा भूखे होते है, हम तो बस अपनी घर-वाली ...

राघू : वो तो जगह-जगह लार टपकाते फिरते हैं।

कल्लन : तो तू क्या समझता है कि अपना गामा ब्रह्मचारी है ?

मकसूद : हां भाई, जब बाज़ार मे दूध मिल जाए तो भैंस कौन बांधे ?

राघू : (हँसकर) दूध पिया (गामा का कुल्हड़ उठाकर दारू पी जाता है) और कुल्हड फोड दिया। (कुल्हड़ उठाकर चल देता है)

गामा : (कुल्हड़ छीनते हुए) तुम सबको अपने जैसा समझते हो साले जूठे पत्तल चाटते फिरते हो।

राघू : (गुस्से से) गामा, चल माना कि हम तो जूठे पत्तल चाटते हैं। पर भइये तुम्ही'''कौन थाली में खाते हो ?

गामा : मुझे नफरत है औरत ज़ात से, साली बवाले जान !

जगली : गामा आज तो तू जवान है, कल के बारे में सोचा है जब बुड्ढा हो जाएगा। कोई एक बूंद पानी भी देने वाला नसीब नही होगा।

कल्लन : (व्यंग से) तूने अपने बाप को पानी दिया था ?

मकसूद : बेचारा जब मरा था तो दो दिन का भूखा था।

जंगली : (खिसियाकर) मैं गामा से बात कर रहा हूँ।

गामा : हाँ तो जगली तेरे बाप को पानी नसीब हुआ था।

जगली : वो दरअसल...

कल्लन : (दिखावटी सहानुभूति से) रामदेई को उसकी सूरत से नफरत थी और अगर ये पानी तो पानी, खाली गिलास भी ले जाता तो रामदेई छोड जाती।

गामा : तो जगली, तुझे उम्मीद है कि तेरी ओलाद तेरे बुढ़ापे मे काम आएगी।

जंगली : उम्मीद तो की जा सकती है।

गामा : तेरा बाप चार साल ऐड़ियाँ रगड़ता रहा और जब मरा तो दो दिन का भूखा था। तू अपनी घरवाली से इतना डरता था कि उसे आग देने से पहले तुझे पूछना पडा कि आग दे दूं या नही ?

जंगली : साली पीली बात को मत घुमा।

गामा : अच्छा जंगली तेरी घरवाली को तेरा दारू पीना पसन्द है ?

कल्लन
राधू : न···हो···ऽ ?
मकसूद

गामा : मैं जंगली से पूछ रहा हूँ।

जंगली : नहीं।

गामा : वह तुझे बाप को रोटी देने से रोक सकती थी, मगर दारू पीने से नहीं रोक पाई ?

जंगली : गामा तू बात को गलत तरफ मोड़ रहा है···

गामा : तुम साले खुद अपने बाप से पीछा छुड़ाना चाहते थे और बहाना घरवाली का।

जंगली : (पस्त) गा·· मा।

गामा : गामा गया तेल लेने। बात क्यों काटी। अपनी तो सम्भलती नहीं साले, दूसरे के फटे में टांग अड़ाते हो। सोच रहे होगे कि गामा से तफरीह करेंगे।

कल्लन : अबे गामा बुढ़ापा तो हर किसी पर आता है, कुछ तो सोचा होगा ?

गामा : मैं आज के बारे में सोचता हूँ। मौत से पहले मौत के बारे में सोचकर बेवक्त मरना मुझे पसन्द नहीं। रहा सवाल बुढ़ापे का तो पहले तो बुढ़ापा आएगा ही नहीं और अगर आया भी तो मेरा बुढ़ापा तुम्हारी तरह बुढ़िया की खिदमत करते हुए नहीं गुजरेगा।

राधू : कल्लन ?

कल्लन : हाँ !

राधू : बोल ?

कल्लन : क्या ?

राधू : वही !

कल्लन : (स्वयं को बचाते हुए) वही क्या ?

मकसूद : (कल्लन को डरा जानकर) व···ही जो उस्ताद के पीछे कह रहा था।

कल्लन : (डाँट कर) चुप बे चमचे।

जंगली : कहदे ना ! कोई बुरी बात थोड़े ही है। गामा हम लोगों का दोस्त है और अगर दोस्त के लिए दारू का एक कुल्हड़ भी कुर्बान करना पड़े तो कोई बात नहीं।

कल्लन : कह दूँ ?

राधू : कह दे

कल्लन : कह दूँ ?

मकसूद : तू कह ही नहीं सकता, तेरी हवा वैसे ही खराब हो रही है।

कल्लन : (उठते हुए) गा···मा (नजदीक आकर गामा को कोने में ले जाता है। फुसफुसा कर)

कल्लन : यार गामा, कोई ऐसी वैसी बात हो तो मुझे बता, बड़ा मारू नुस्खा है मेरे पास !

गामा : (गुस्से से धक्का देते हुए) नुस्खा देना अपने बाप को !

[कल्लन राधू के पास गिरता है राधू उसके ऊपर अपनी टाँगें रख देता है]

कल्लन : (उठने का प्रयत्न करते हुए) देख गामा, बाप तक मत पहुँच, नहीं तो···

गामा : (उछल कर कल्लन के पास पहुँचते हुए) नहीं तो क्या ? तू मेरी मर्दानगी पर लांछन लगाये और मैं बाप तक भी न पहुँचू तो क्या माँ तक पहुँचू ?

कल्लन : (क्रोधित होकर) गामा होश की दवा कर।

मकसूद : (बैठाते हुए) अबे धोबी के, होश की दवा तू कर। यहाँ दारू-खाने में बैठकर कहता है कि होश की दवा कर !

कल्लन : चुप बे !

[जंगली, गामा व कल्लन दोनों को अर्थपूर्ण दृष्टि से देखता है फिर मकसूद को कमज़ोर पाकर]

जंगली : बैठ भाई कल्लन नाराज क्यो होता है ? चल आज तुम दोनो को मकसूद ही पिलाएगा।

मकसूद : (झगड़ालू औरत की तरह) क्यो ? आज क्या मेरे लौंडे का खतना है ?

राघू : अबे ख'''त'''न। (वो उँगलियों से कैंची का माइम करता है) कहाँ से होगा, जब धरती ही बजर है।

जंगली : मगर भइये, हम कब तक इन्तज़ार करते रहेंगे ?

[सब तेज़ी से हँसते है]

मकसूद : हँसो मत, मेरी घरवाली बाझ नही है।

राघू : घरवाली बाझ नही है तो क्या तू है ?

गामा : तुम लोगों के पास इसके सिवा दूसरी बात नही रहती क्या ?

जंगली : औरत साली बवाले जान ! यही बात सुनें ना तेरी ?

गामा : आल्हा सुनोगे ?

कल्लन : (घबड़ाकर खड़ा हो जाता है) अबे उठो, इसने आल्हा गाना शुरू कर दिया तो रात यही गुजर जाएगी और वहाँ पर बीवियाँ गाली देंगी।

[जंगली और राघू उसके साथ हो जाते हैं]

अबे मकसूद, तू इसके साथ टैम बरबाद क्यों करता है इसके तो आगे नाथ, न पीछे पगहा।

[गामा सबको जाता देखता है फिर मच के मध्य मे आकर गाना शुरू करता है]

बारह बरस ले कूकर जीवे
और तेरह लो जीये सियार
बरस अट्ठारह क्षत्री जीवे
आगे जीवन को धिक्कार।

[गामा के आल्हा शुरू करते ही चारों लौट आते हैं और मस्त होकर झूमने लगते हैं। गामा के अन्तिम शब्दों को दोहराते हैं]

सगुन विचारें ब्राह्मन बनिया
जो सिर धर छत्र ब्याहन जाँय
सगुन विचारे न हम क्षत्री
जो रन में चढ़ लोह चलाँय।

अन्धकार

दृश्य दो

[प्रातः काल का समय गामा छत पर पड़ा सो रहा है, उसके खर्राटे गूंज रहे हैं। प्रातः काल के लिये उपयुक्त संगीत।]

भोलू : (प्रवेश करते हुए) गामा ओ गामा, अबे उठ, (बराबर में लेटते हुए) अरे धन्धे पर नही जाएगा क्या? ये साला गामा भी क्या घोड़े बेचकर सोता है, वाकई मे मुकद्दर वाला है, तबियत से खुले में, ठण्डी हवा में सोता है, ना रॉय-रॉय ना कॉय-कॉय (पग ध्वनि सुनकर, घबड़ाकर उठ बैठता है) अरे ओ गामा अब तो उठ जा।

धन्नो . (प्रवेश करते हुए) तुम्हें कौन सी रॉय-रॉय है? मैं या मेरी औलाद?

भोलू . अँय (घबड़ाकर) कोई नही, कोई भी नही।

धन्नो : अरे एक-एक टुकड़े को तरसते फिरते थे; शुक्र मनाओ मेरे बाप का जो उसने तुम्हें भूखा मरते देखकर खोंमचा लगवा दिया और अब उसी की बेटी को रॉय-रॉय, कॉय-कॉय बतलाते हो··· [भोलू कुछ बोलना चाहता है उसे अवसर न देते हुए] और इस मुए की तारीफ करते हो जो मेरे टुकड़ों पर पलता है और कहता है—"औरत साली बवाले जान" अरे, एक दिन भी रोटी बनाकर न दूं तो भूखा मर जाए।

[वापिस जाने लगती है]

भोलू : (पस्त) शुक्र ही तो मना रहा हूँ, एक तेरा-एक तेरे बाप का कि उसने तेरी जैसी पैदा कर दी।

धन्नो : (पलटकर) क्यो, क्या खराबी है, मेरे अन्दर?

भोलू : (घबड़ाकर) ख···रा···बी!

धन्नो : अगर एक दिन भी इस घर मे न रहूँ तो मालूम पड़ जाए।

भोलू : अच्छा भाई अब बस भी कर, तू तो जान को आ जाती है।

मेरा तो बोलना भी गुनाह है। अरे मेरे ससुर की लाडली अब माफ़ भी कर दे।

धन्नो : क्यों कर दूं माफ ? किसी के बाप का कर्ज़ है मुझ पर ?

भोलू कर्ज़ तो मेरे पर है, तेरे बाप का।

धन्नो जब देखो जली-कटी बात करते रहते हो (रोते हुए) मेरा तो कुछ है ही नहीं। मेरी तो धेले भर को भी इज्जत नहीं इस घर में। (भोलू पर कोई असर न देखकर जोर से रोते हुए) हे भगवान मेरे बाप की फूट गयी थी जो ऐसे निखट्टू के पल्ले बाँध दिया मेरे को।

भोलू : फूटी तो मेरी थी जो···

धन्नो : (गुस्से से) तो ठीक है मैं जा रही हूँ, (बच्चे को भोलू की *गोदी में पटक देती है) सम्भालो अपना घर !*

भोलू . धन्नो···?

धन्नो : (पलटकर) अरे मैंने भी अगर अपनी ड्योढी पर नाक नहीं रगड़वा दी तो मेरा नाम भी धन्नो नहीं ? दो टके के आदमी, क्या समझते हो अपने को ?

भोलू : एक टके का—

धन्नो : (पलटकर) तुम एक टके के आदमी हो ? अरे तुम एक टके तो क्या, एक कौडी के भी आदमी नहीं हो।

भोलू : (चापलूसी से) अरी धन्नो गलती हुई, मैं तो आदमी ही नहीं हूँ, मैं तो गुलाम हूँ तेरा।

धन्नो : (भोलू को धक्का देती है) परे हटो, तुम क्या समझते हो, मैं ऐसे ही मान जाऊँगी। अरे बाले की लौंडिया हूँ, डंका बजता है बाले का सारी बस्ती में। अगर मैंने भी नाक नहीं रगड-वाई तो मैं भी असल बाप से पैदा नहीं ?

भोलू : (प्यार से) धन्नो।

धन्नो : देखो तुम ऐसे मत बोलो, मेरा खून खौल रहा है।

भोलू : तू अपना खून ठंडा कर ले। मैं माफी माँग रहा हूँ।

गामा : (उठकर आँखें मलने का उपक्रम करते हुए) अरे सिर्फ माफी क्यों माँग रहा है ? पैर छू पैर। तभी तो असली गुलाम साबित होगा।

धन्नो : (भोलू को दूर हटाते हुए) हम मियां बीवी क्या करते हैं, क्या नही करते, तुझसे मतलब ?

गामा : (हँसते हुए) बीवी क्या करती है इससे तो मतलब नही, मगर मियां क्या करता है।

धन्नो : तू कौन है ? कोतवाल !

गामा : मैं कोतवाल तो नही, मगर एक आदमी को टट्टू बनते देखने मे परेशानी जरूर होती है।

धन्नो : कौन है टट्टू ?

(गामा सॉकल में आँखें घुमाता है। फिर मुस्कराकर भोलू को देखता है। भोलू अस्त-व्यस्त आँखें इधर-उधर घुमाता है। धन्नो गामा की निगाहों का पीछा करती है।)

धन्नो : तेरा मतलब है यह ! (भोलू को इंगित करती है) देख गामा मैं इसकी बीवी हूँ मुझे हक है कि मै इसे कुछ भी कहूँ पर तू कहने वाला कौन होता है ?

गामा : मैं ? मैं इसका भाई हूँ।

धन्नो : अहँ य'''बडा आया भाई बनके।

[भोलू बीच बचाव करते हुए]

भोलू : तू नीचे जा मै इससे निबटता हूँ।

धन्नो : (भोलू को हटाती हुई) मैं नही जाऊँगी। आज फैसला मेरे सामने होगा।

भोलू : अरी जा, मर्दों की बातो में औरतो को दखल नही देना चाहिए।

[गामा निर्लिप्त भाव से दो बीडियाँ सुलगाता है। एक अपने मुँह मे लगाता है दूसरी भोलू को देता है। भोलू बीड़ी अपने मुंह तक ले जाता है, अचानक ध्यान आता है कि धन्नो खडी है। बीड़ी पैर से मसल देता है]

धन्नो : मर्दों की बात, कौन है मर्द ?

भोलू : ठीक, तू बड़ी, जा मेहरबान, औरतों की बातों में मर्दों को दखल नही देना—

धन्नो : मैं नही जाऊँगी।

[भोलू परेशान हो जाता है फिर अचानक जैसे तुरुप चाल याद आ गई हो]

भोलू : अरे खोमचा तैयार नही करेगी तो शाम को खाएगी क्या खाक?

[धन्नो पैर पटकती हुई नीचे चली जाती है]

भोलू : देख गामा, तेरी वजह से मेरे घर मे रोज कलेश होता है। तेरी रोटी बनाने मे धन्नो को परेशानी होती है। अब तू ब्याह कर ले।

गामा : मैं ब्याह कर लूं! (भोलू गर्दन हिलाकर कहता है—हाँ) और जो कलेश रोज तेरे यहाँ होता है वह मेरे यहाँ भी होने लगे। अरे रोटी बनाती है तो कौन सा अहसान करती है, पैसे देता हूँ।

भोलू : फिर भी तू इस तरह कब तक कुआरा रहेगा? आखिर?

गामा : मैंने कितनी बार कहा है कि ब्याह का मरा हुआ साँप मुझे गले में नही डालना। सडी गर्मी मे साली छत पर ही नींद नही आती और जोरू के लिए नीचे नरक मे पडे रहो। साफ-साफ सुन ले मुझे नही करना ब्याह, हाँ ज्यादा परेशानी हो तो ढाबे में खाना शुरू कर दूं।

भोलू : भाई, मैं तो तेरे भले के लिए कह रहा था।

गामा : मेरे भले के लिए कह रहा था। वैसा ही भला जैसा अभी सारा मुहल्ला देख सुन रहा था।

[गामा हँसता हुआ चला जाता है। भोलू असहजता महसूस करता है]

अन्धकार

दृश्य तीन

[प्रातः काल के उपयुक्त संगीत। दो-तीन व्यक्ति प्रातः क्रियाओं से निवृत्त होने के लिए लोटा-दातुन लेकर आते-जाते दिखाई देते हैं। आपस में दुआ सलाम होती है। प्रकाश तेज होता है, साथ ही बाजार के लिए उपयुक्त शोरगुल सुनाई देता है।]

फौजी : (बायें विंग से) कबाडी वाला, फटी पुरानी चप्पल, जूते नमक से बदल डालो।
[मंच के मध्य में आते हुए]
पुराना टूटा-फूटा लोहा कबाड बेच डालो।

गामा : (दाएं विंग से फौजी की आवाज मद्धिम पड़ने के साथ ही) कलई, कलईगीर, बर्तनों पर कलई करवा लो,
[मंच के मध्य में आते हुए]
मुर्दे बर्तन जिन्दा करा लो। बर्तनों का डागदर।
[बैठते हुए]
कलईगीर।

जंगली : (प्रवेश करते हुए) मोची, मोची काम, जूते बनवा लो, मोची काम।

गामा : अरे जगली ! आज बडे तडके निकल पड़ा।

जंगली : निकल क्या पड़ा, साली बीवी ने नाक में दम कर रखा है, न चैन से सोने देती है, न खाने।

गामा : (हँसकर) औरत साली बवाले जान !

फ़ौजी : क्यो क्या हुआ ?

जंगली : मत पूछ कि क्या हुआ। सुन अगर मैं कही मर खप जाऊँ तो

इसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर नही होगी।

गामा : (बोड़ी सुलगाते हुए) कुछ गहरी बात लगती है।

फौजी : तू बताता क्यो नही ?

जंगली : क्या बताऊँ जब से कल्लन धोबी ने ऊपर टाट का पर्दा लगाया है तब से साली का दिमाग खराब हो गया है। कहती है क्वाटर नरक है, इसमे नही सोऊँगी, ऊपर छत पर सोने का इन्तजाम करो। तीन दिन के अन्दर टाट और बांस लगाकर पर्दा नही बनाया तो छोड़ जाऊँगी।
(गामा से) ला बीडी निकाल।

गामा : (हँसता है, बीड़ी का बण्डल देता है) यह तो बड़ी खुशी की बात है, पीछा छूटेगा।

जंगली : (बण्डल गामा के हाथ पर पटकते हुए)
तेरे लिए खुशी की बात होगी, अपना गुजारा बगैर औरत के नही होता है।

फ़ौजी : (गामा से) यह कल्लन की खोपड़ी भी खूब काम करती है, साले ने कटे-फटे टाट टांग कर पर्दा बना लिया और नीचे कोठरी की सीलन बदबू और घुटन से छुटकारा पा लिया।

गामा : (तिरस्कार पूर्ण स्वर में) और जो काम रात के अंधेरे मे बंद कोठरी में करते थे, चांदनी रात मे करने लगे, वो भी खुली छत पर, लानत है !

फ़ौजी : (हँसकर) किस पर ? काम पर ?

गामा : तुम पर और किस पर। सालो जब औकात नही है तो क्यो आगे बढ़ते हो, बूता तो है नही कि खुद का भी पेट पाल सकें और करेंगे शादी।

जंगली : फिर हम क्या करें ?

फ़ौजी : (व्यंग से) शराब पियो और अपनी कमजोरी पर पर्दा डालो।

गामा : (गुस्से से) तेरे कहने का मतलब क्या है ?

फ़ौजी : (विषय परिवर्तित करते हुए) गामा तू तो सबसे ज्यादा अक्ल वाला है तू ही बता, बेचारा जगली अब क्या करे ? शादी तो ये कर चुका। बकौल तेरे, बवाले जान तो लटक गई इसके गले में !

गामा : करे क्या ? भुगते अपनी करनी का फल, और उस वक्त तक उस महल में बन्द रहे जब तक कहीं कोई साफ सुथरा घर न ले ले।

जंगली : गामा तू भी बस···बेवकूफी की बात करता है। आजं इस महँगाई के जमाने मे क्या कोई हिम्मत कर सकता है घर लेने की ?

गामा : दारू पीना छोड़ो, साल दर साल की फैक्ट्री बंद करो तो सब कुछ हो सकता है।

जंगली : अच्छा, अच्छा अब अपनी बकवास बंद कर (लगभग चीखते हुए) मोची काम, मोची काम।

फ़ौजी : कबाड़ी···कबाडी वाला, फटी पुरानी चप्पल-जूते···

गामा : कलईगीर, कलई···

[तीनो की आवाजे एक साथ मिलकर काफ़ी तेज हो जाती हैं। बाज़ार का शोरगुल आवाजो मे मिल जाता है।]

अन्धकार

दृश्य चार

[गामा छत पर सो रहा है। दृश्य दो की भाँति दूसरी छतों से किसी का हाथ, किसी के पैर आदि दिखाई दे रहे हैं। भोलू की पत्नी धन्नो छत पर आती है।]

धन्नो : (ऊँचे स्वर में) अब नीचे ही खड़े रहोगे या ऊपर भी आओगे।

भोलू : अरे आ रहा हूँ, शोर क्यों मचाती है। सब लोग सो रहे हैं।

धन्नो . सब सो रहे हैं तो क्या हुआ ? क्या किसी के बाप का कर्ज है मुझ पर ?

भोलू . कर्ज नहीं है तो इसका मतलब है कि तू छत पर इस तरह चीखे···

धन्नो : क—या—? मेरे बोलने को तुम चीखना कहते हो !
(रोते हुए)
अरे गैंदा कल्लन सब सुनो, जल्दी जाकर मेरे बाप को खबर करो, इस भोलू का जी फिर गया है। इसके दिल में कोई और आ गई है। पहले इसे मेरी बोली सुरीली मीठी लगती थी (और जोर से रोती है) अब मेरे बोलने को चीखना कहता है··· (दहाड़ें मारकर रोती है)

भोलू : (घबड़ाकर) अरे नहीं मेहरबान, तू तो जब बोलती है तो फूल झड़ते हैं और वो भी गोभी के।

धन्नो : क्या कहा, काये के !

भोलू : (धीरे से) गोभी के !
(धन्नो से) कुछ ··नहीं, तू ··तू आराम से बैठ।

धन्नो : बैठ, बैठ कुछ नहीं, मैं तो कल से यहीं सोऊँगी।

भोलू : (लापरवाही से) तो सो।

धन्नो : (नकल करते हुए) तो सो। मैं अकेली नहीं तुम भी मेरे साथ इसी जगह सोओगे।

भोलू : अरे···रे···कोई देखेगा, सुनेगा तो क्या कहेगा ?

धन्नो : कहेगा क्या। सारी दुनिया सो रही है, जंगली, कल्लन, राघू सभी ने तो टाट टाँग लिए हैं।

भोलू : ना मेहरबान, मैं तो नीचे ही ठीक हूँ, अभी मैं इतना बेशर्म नहीं हुआ···

धन्नो : तुम बेशर्म नहीं हुए—तो बाकी तो सब जैसे बेशर्म हैं।

भोलू : अरे जरा सोच तो सही टाट का पर्दा भी कोई पर्दा है, फिर टाट लग जाने से हवा कहाँ आती है ?

धन्नो : और नीचे तो जैसे फिरीज लगे हैं, मच्छर, खटमल, सीलन और ऊपर से उमस।
(यह देखकर कि भोलू निर्विकार खड़ा है ऐलान के स्वर में)
साफ़ बताए देती हूँ कि कल शाम तक यहाँ इस जगह सोने का इन्तजाम हो जाए।

भोलू : (बड़े उत्साह से दूसरा हथियार प्रयोग करते हुए)
मगर इतने पैसे कहाँ है ?

धन्नो : दारू पीने को पैसे हैं और टाट लगाने को नहीं ?
(भोलू—जिसमें दूसरे हथियार के प्रयोग के साथ ही हवा भर गई थी और वह अकड़कर खड़ा हो गया था ऐसे हो जाता है जैसे किसी ने गुब्बारे में पिन चुभो दी हो। अचानक नाराज़गी से—)

भोलू : गलत इल्ज़ाम मत लगा, मैं दारु नहीं पीता।

धन्नो : तुम दारु नहीं पीते ?

भोलू : नहीं।

धन्नो : (व्यंग्य से) ऐसा तो नहीं कि तुम भूल रहे हो ?

भोलू : नहीं।

धन्नो : फ़ौजी का सर क्या हरिया ने फोड़ा था और…

भोलू : वो-वो, हाँ होली-दीवाली की बात अलग है।

धन्नो : अगर दीवाली रोज़ होती हो तो ?

भोलू : मैं रोज़ दारू नही पीता।

धन्नो : (वापस जाते हुए) कल यहाँ टाट का पर्दा लग जाए।

भोलू : धन्नो, अरी ओ धन्नो (अन्तिम हथियार का प्रयोग करते हुए) ज़रा सोच तो सही—हम लोग ऊपर सोएँगे तो बच्चे कहाँ सोएँगे ?

धन्नो : (चमककर) बच्चे !

भोलू . (लापरवाही से) बच्चे।

(धन्नो शान्त भाव से चलती हुई गामा के पास पहुँचती है।)

धन्नो . (सामान्य रूप से) बच्चे भी यहीं सोएँगे।

(ऐलान करते हुए तेज़ स्वर में)

अच्छी तरह कान खोलकर सुन लो कल से मैं यहीं पर सोऊँगी।

भोलू : देख, अब चाहे तो शोर मचा, या कुछ भी कर, मैं यहाँ नही सोने वाला।

धन्नो : (शान्त भाव से) सोच लो।

भोलू : (झटके से) सोच लिया।

धन्नो अच्छी तरह।

भोलू : (घबड़ाकर) अच्छी तरह।

धन्नो : (तेज़ स्वर मे) एक बार फिर सोच लो।

भोलू : (हथियार डालते हुए) धन्नो बात क्या है ?

धन्नो : बात को मारो गोली।

भोलू . तू समझती क्यों नही ?

धन्नो : (सामान्य रूप में) मैं सब समझती हूँ।

(धमकी) साफ़ साफ़ बोलो, कल से कहाँ सोना है ?

भोलू : (पस्त) धन्नो।
धन्नो : धन्नो की ऐसी तैसी।
भोलू : तेरी मर्जी है।
धन्नो : मेरी मर्जी नहीं है।
भोलू . (पस्त) तो-तो मेरी मर्जी है।
धन्नो : ठीक, गामा ओ गामा—
गामा : (नींद में होने का अभिनय करता हुआ) अयँ, हाँ, क्या बात है, भोलू क्या बात है ?
धन्नो : आज तुम दोनों को काम पर नहीं जाना है, आज यहाँ पर टाट का पर्दा लगा लेना।
गामा : टाट का पर्दा, उसका क्या होगा ?
धन्नो : (भोलू से) मेरे चाचा को साथ ले लेना उसने कुछ दिन बार-दाना बाजार मे पल्लेदारी की है वह टाट सस्ता दिला देगा।
गामा : मगर उसका होगा क्या ?
धन्नो : होगा क्या ! हम दोनो सोएँगे।
गामा : तुम दोनों···उसमे सोओगे ! मगर कैसे ?
धन्नो : जैसे सब सो रहे है।
गामा : अरे जरा सोच तो सही, टाट का पर्दा भी कोई पर्दा होता है ? जरा-सी हवा चली नही कि सब कुछ दिखाई देता है।
भोलू : और क्या, मैं भी तो यही कह रहा हूँ—
(धन्नो भोलू को घूरकर देखती है)
तू बस पर्दा लगवाने में मेरी मदद करा देना।
गामा : दूसरे सब सोते हैं तो सोएं। सारी छतों पर इन्सान इस तरह फैले हैं जैसे बल्ब के आगे मच्छर।
भोलू : (उत्साह से) ठीक।
धन्नो : (भोलू को घूरकर देखती है) कुछ भी हो, मैं तो कल से यही सोऊँगी।

[धन्नो जाती है, भोलू थककर बैठ जाता है। गामा दो बीड़ी सुलगाता है]

भोलू : इस औरत ने तो नाक मे दम कर रखा है, जब से इसके बाप ने खोमचा लगवाया है कुछ ज्यादा ही सर चढ़ गई है।

गामा : (बीड़ी भोलू को देते हुए) तो उतार दे, नीचे।

भोलू : गामा, शुरू मे औरत साली बड़ी प्यारी चीज लगती है। बड़े नाज नखरे दिखाती है। हर बात में जैसा चाहो, करती है जैसे उसकी खुद की कोई आवाज ही नहीं, और यही बात मर्द के लिए भारी पड़ती है। वो उल्लू का पट्ठा समझता है कि बड़ी सीधी औरत मिली है उसे, फिर धीरे-धीरे उसे खुद नहीं मालूम पड़ता कि उसके गले से कब आवाज निकलनी बन्द हो गई, फिर तो बस वो सुनता है—बोलता नही। तू नहीं समझेगा गामा ! उतारना इतना ही आसान होता तो फिर बात ही क्या थी।

गामा : अपनी चीज है प्यारे, चाहे उतार चाहे चढ़ा और मन मे आए तो सर पर बिठा , भोलू तू मर्द है तो मर्दों जैसी बात कर।

भोलू : मर्दों जैसी बात अब नही हो सकती। मैंने बड़े-बड़े शेरखाँ को बीवी के सामने चूहे खाँ बनते देखा है।

गामा : तेरे कहने का मतलब है हर मर्द को औरत के सामने दबना ही पड़ता है ?

भोलू : नही, अगर मर्द शुरू से ही कोशिश करे तो वह मर्द बना रह सकता है।

गामा [: ये सब बेकार की बातें हैं।

भोलू छोड भाई तेरा क्या है, तू तो मस्त है। बहरहाल कल पर्दा लगवाने मे मेरा हाथ बँटा देना।

[भोलू जाता है]

गामा : टाट का पर्दा। इस साले धोबी की औलाद का दिमाग भी कुछ

आगे ही चलता है। साले ने घर के कटे-फटे टाट टाँग कर सोने का बन्दोबस्त कर लिया और अब तो सबके दिमाग़ खराब हो गए हैं। जिधर देखो टाट। लगता है अपनी ज़िन्दगी भी बस फटा हुआ टाट है। चल गामा अब सो जा।

[कहते हुए गामा लेट जाता है। प्रकाश धीरे-से मद्धिम होता है।]

अन्धकार

दृश्य पाँच

[विभिन्न स्पॉट्स विभिन्न लेविल्स पर भटकते हुए प्रकाश देते हैं। गामा अपनी छत पर सो रहा है। उसी छत पर दड़बे में भोलू और धन्नो सो रहे हैं। किसी का सर, किसी का हाथ और किसी का पैर_दड़वों/विंग्स से दिखाई दे रहा है। एक स्त्री के तेज स्वर में खिलखिलाकर हँसने की आवाज़ रात के सन्नाटे को भेद जाती है। एक चुम्बन की आवाज़ के साथ एक पुरुष का बेहूदा अट्टहास वातावरण को सरगर्म बना देता है। गामा बेचैनी से करवट बदलता है।]

स्त्री स्वर : आज नहीं, अभी कल तो···

पुरुष स्वर : कल कहाँ, तीन दिन हो गए। उहूँ ज़रा पास तो आओ।

स्त्री स्वर : उहूँ।

[इसके साथ ही गामा के सामने वाले दड़बे का टाट तेज़ी से हिलने लगता है। गामा एक झटके से उठ बैठता है। बिलकुल पागलों के अन्दाज में जल्दी से सुराही से दो-तीन गिलास पानी पी जाता है।]

[एक लम्बे चुम्बन की आवाज़, गामा खुद को आवाज़ों से बचाने की कोशिश करता है। गेंदा उठकर साइक के सहारे जाती है। गामा को बैठा देखकर ठिठककर रुकती है, फिर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखती है। पानी पीकर लौटती है मुस्कराती है।]

गेंदा : सि···ऽ···ऽ···।

गामा : **(बड़बड़ाता है)** साली रण्डी।

नेपथ्य : रण्डी नहीं भूखी।

गामा : कौन हो तुम ?

नेपथ्य : नहीं, रण्डी नहीं—भूखी।

गामा : मैं पूछता हूँ कौन हो तुम ?

नेपथ्य : वह लड़की रण्डी नहीं भूखी है।

गामा : (गुस्से से) कौन हो तुम ?

नेपथ्य : मुझे छोड़ो, मुझे तुम पहचानते हो। उस लड़की के बारे में सोचो जो अभी-अभी यहाँ से गई है और तुम्हें इशारा कर गई है।

गामा : (झुंझलाकर) कौन हो तुम ?

नेपथ्य : वो लड़की रण्डी नहीं है…।

गामा : नहीं वह रण्डी है।

नेपथ्य : यह तुम कैसे कह सकते हो ?

गामा : रात भर जब देखो तांक-झांक करती रहती है।

नेपथ्य : यह उसकी उम्र का तकाजा है।

गामा : उम्र क्या बस उसी की हुई है ?

नेपथ्य : सबकी होती है, और ऐसा समय भी आता है जब तांक-झांक अच्छी लगती है।

गामा : साली गन्दे इशारे भी तो करती है।

नेपथ्य : उसमें उसका कुसूर नहीं, इधर भोलू का तहमद खुला पड़ा है। फौजी के बच्चे पड़े रो रहे हैं और वो…(हँसी)।

गामा : (चिढ़कर) तुम उसकी वकालत क्यों कर रहे हो ?

नेपथ्य : यह वकालत नहीं है।

गामा : (खीझकर) फिर क्या है ?

नेपथ्य : (भयंकर अट्टहास)।

गामा : (खीलकर) बंद करो यह हँसी।

(फिर तेज अट्टहास)

मैं कहता हूँ कि बन्द करो, तुम्हारी यह हँसी मेरे दिल में

उबलते लोहे की तरह उतर रही है।

नेपथ्य . अब पता चला तुम्हे, मैं तुम्हे तुम्हारी जरूरतें बता रहा हूँ।

गामा : (खीझकर) मैं जानता हूँ अपनी जरूरतें ! मुझे बताने की जरूरत नही।

नेपथ्य . (व्यंग पूर्वक) तुम जानते हो ?

गामा · हाँ मैं जानता हूँ, तुम चले जाओ बस।

नेपथ्य : तुम क्या चाहते हो ?

गामा · मैं सोना चाहता हूँ।

नेपथ्य : बस ?

गामा : हाँ, मैं सोना चाहता हूँ।

नेपथ्य : तुम सोना चाहते हो, मगर सो नही पाओगे ? तुम्हें तुम्हारी जरूरतें परेशान करती रहेंगी, वे जरूरतें जिन्हें तुमने दबा रखा है।

[कुछ देर तक नेपथ्य का अन्तिम संवाद गूँजता रहता है फिर मद्धिम होकर खत्म हो जाता है। गामा सोने का यत्न करता है।]

[एक दड़बे मे माचिस जलने का प्रकाश होता है। गामा को लगता है उसने अत्यन्त ही भयानक दृश्य देख लिया है। वह पसीने-पसीने हो जाता है। दूर कही सुराही और गिलास के टकराने की आवाज आती है। ऐसी आवाजें आती हैं कि दो व्यक्ति आपस मे गुत्थम-गुत्था हो रहे हो। एक चुम्बन की आवाज आती है।]

स्त्री स्वर · (दबा-दबा किन्तु स्पष्ट) सकूरा जाग जाएगा।

पुरुष स्वर : जगने दे।

[इसके बाद तो जैसे भूचाल आ गया हो चारपाई के चर्र चूँ, चर्र चूँ की आवाजों के साथ धीरे-धीरे तेज होते साँसों की

आवाज़, सिसकारियाँ आदि गामा को बुरी तरह परेशान करती है ! अचानक जैसे कोई गिरा हो।]

गामा : बंद करो ये आवाज़ें।

(गायक मण्डली अन्य पात्रों के साथ कोरस में बदल जाती है। आधा कोरस बायीं विंग में है और आधा दायीं विंग में)

मुख्य स्वर : आ···वा···ज़ें

बायां, दायां कोरस : आ···वा···ज़े

मुख्य स्वर : आ···वा···ज़ें

बायां कोरस : (जल्दी-जल्दी) आवाज़ें, आवाज़ें, आवाज़ें, आवाज़ें, आवाज़े आवाज़ें,

दायां कोरस : आवाज़ें, आवाज़ें, आवाज़ें, आवाज़ें, आवाज़े, आवाज़ें,

मुख्य स्वर : आ···वा···ज़ें

कोरस : आ···वा···ज़ें,

गामा : हाँ, हाँ नंगी आवाज़ें

बायां कोरस : नंगी, नंगी, नंगी, नंगी
नंगी, नंगी, नंगी, नंगी

दायां कोरस : नंगी, नंगी, नंगी, नंगी
नंगी, नंगी, नंगी, नंगी

कोरस : नंगी आवाज़ें, छोटी आवाज़ें
छोटी आवाज़ें, नंगी आवाज़ें
नंगी आवाज़ें, छोटी आवाज़ें
छोटी आवाज़ें, नंगी आवाज़ें

गामा : छोटी आवाज़ें ?
नहीं, नहीं, छोटी नहीं—बड़ी-बड़ी गन्दी आवाज़ें

उबलते लोहे की तरह उतर रही है।

नेपथ्य . अब पता चला तुम्हें, मैं तुम्हे तुम्हारी जरूरतें बता रहा हूँ।

गामा : (खोझकर) मैं जानता हूँ अपनी जरूरतें ! मुझे बताने की जरूरत नही।

नेपथ्य · (व्यंग पूर्वक) तुम जानते हो ?

गामा : हाँ मैं जानता हूँ, तुम चले जाओ बस।

नेपथ्य : तुम क्या चाहते हो ?

गामा : मैं सोना चाहता हूँ।

नेपथ्य : बस ?

गामा · हाँ, मैं सोना चाहता हूँ।

नेपथ्य : तुम सोना चाहते हो, मगर सो नही पाओगे ? तुम्हें तुम्हारी जरूरतें परेशान करती रहेंगी, वे जरूरतें जिन्हे तुमने दबा रखा है।

[कुछ देर तक नेपथ्य का अन्तिम सवाद गूँजता रहता है फिर मद्धिम होकर खत्म हो जाता है। गामा सोने का यत्न करता है।]

[एक दडबे मे माचिस जलने का प्रकाश होता है। गामा को लगता है उसने अत्यन्त ही भयानक दृश्य देख लिया है। वह पसीने-पसीने हो जाता है। दूर कहीं सुराही और गिलास के टकराने की आवाज आती है। ऐसी आवाजें आती हैं कि दो व्यक्ति आपस मे गुत्थम-गुत्था हो रहे हों। एक चुम्बन की आवाज आती है।]

स्त्री स्वर : (दबा-दबा किन्तु स्पष्ट) सकूरा जाग जाएगा।

पुरुष स्वर : जगने दे।

[इसके बाद तो जैसे भूचाल आ गया हो चारपाई के चर्र चूँ, चर्र चूँ की आवाजो के साथ धीरे-धीरे तेज होते साँसो की

आवाज़, सिसकारियाँ आदि गामा को बुरी तरह परेशान करती हैं ! अचानक जैसे कोई गिरा हो।]

गामा : बंद करो ये आवाज़ें।

(गायक मण्डली अन्य पात्रों के साथ कोरस में बदल जाती है। आधा कोरस बायीं विंग में है और आधा दायीं विंग में)

मुख्य स्वर : आ···वा···ज़ें

बायां, दायां
कोरस : आ···वा···ज़ें

मुख्य स्वर : आ···वा···ज़ें

बायां कोरस : (जल्दी-जल्दी) आवाज़ें, आवाज़ें, आवाज़ें,
आवाज़ें, आवाज़ें आवाज़ें,

दायां कोरस : आवाज़ें, आवाज़ें, आवाज़ें,
आवाज़ें, आवाज़ें, आवाज़ें,

मुख्य स्वर : आ···वा···ज़ें

कोरस : आ···वा···ज़ें,

गामा : हाँ, हाँ नंगी आवाज़ें

बायां कोरस : नंगी, नंगी, नंगी, नंगी
नंगी, नंगी, नंगी, नंगी

दायां कोरस : नंगी, नंगी, नंगी, नंगी
नंगी, नंगी, नंगी, नंगी

कोरस : नंगी आवाज़ें, छोटी आवाज़ें
छोटी आवाज़ें, नंगी आवाज़ें
नंगी आवाज़ें, छोटी आवाज़ें
छोटी आवाज़ें, नंगी आवाज़ें

गामा : छोटी आवाज़ें ?
नहीं, नहीं, छोटी नहीं—बड़ी-बड़ी गन्दी आवाज़ें

बायां कोरस : गन्दी आवाजें ?

दायां कोरस : गन्दी आवाजें ?

मुख्य स्वर : नहीं, नहीं प्यारी आवाजें।

कोरस : (मस्ती में) नहीं···प्या···री···आ···वा···जें

गामा : तुम सबकी नंगी आवाजें

कोरस : हम सबकी नंगी आवाजें

[समवेत अट्टहास। गामा आवाजों से खुद को बचाने का प्रयत्न करता है। खड़ा नहीं रह पाता। झटके से गिर जाता है। पूरे मंच पर लेट-लेटकर आवाजों के वार से स्वयं को बचाने की चेष्टा करता है।]

कोरस : तुम भी पैदा करोगे—यह आवाजें :
तुम भी पैदा करोगे—यह आवाजें
नंगी, नंगी, नंगी, नंगी
आवाजें, आवाजें, आवाजें

मुख्य स्वर : आ···वा···जें

[इसके साथ ही गामा पूरे शरीर को धीरे-धीरे ढीला छोड़ देता है, जैसे आवाजों से पस्त हो गया हो।]

अन्धकार

दृश्य छह

[समय रात्रि आठ बजे, दीनू का भटियार खाना। गामा और भोलू बैठे हैं उनके मध्य एक रंगीन दारू की बोतल रखी है। गामा काफी परेशान दिखता है, जबकि भोलू लगातार पी रहा है। भटियारखाने के उपयुक्त शोरगुल। गामा भोलू से कुछ कहना चाहता है परन्तु कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाता है। बार-बार उसके चेहरे को देखता है, फिर पस्त होकर खाली कुल्हड़ फिरकनी की तरह घुमाने लगता है।

गामा : (अटकते हुए) भो···लू···

भोलू : (नशे में) हूँ···।

गामा : (सकुचाते हुए) भो···लू

भोलू : (थोड़े तेज स्वर में) हाँ।

(चुप्पी)

[गामा चारों तरफ देखता है फिर हिम्मत जुटाकर]

गामा : भोलू···

भोलू : (नाराजगी से) क्या है?

(चुप्पी)

अबे कुछ कह भी रहा है?

गामा : (झटके से) भोलू, मेरी शादी कर दे।

भोलू : (आश्चर्य के गहरे सागर में गोते लगा जाता है झटके से पीछे गिर जाता है) अँय···

गामा : (भोलू के अभिनय को समझकर नाराजगी से) भोलू, मेरी शादी कर दे।

भोलू : अबे ज्यादा चढ़ गई है क्या? अभी तो छटांक भर भी अन्दर

नहीं गई होगी ।

गामा : (जोर से) मेरी शादी कर दे भोलू ।

भोलू : भाई आज क्या हुआ है ।

गामा : *मेरी शादी कर दे, नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगा ।*

भोलू : क्यों क्या बात है ?

गामा : आज पन्द्रह रातें हो गई हैं मुझे जागते हुए । मेरी शादी कर दे वर्ना मेरा खाना-खराब हो जाएगा ।

भोलू : क्यों तबियत ठीक है ? चल डाक्टर से दवा दिलवाता हूँ ।

गामा : (झुंझलाकर) मुझे दवा की जरूरत नहीं है, तू मेरी शादी कर दे ।

भोलू : शादी कर दे, शादी कर दे, आखिर हुआ क्या है ? तू तो शादी के नाम से ऐसे बिदकता था जैसे छाता देखकर भैंस ।

गामा : (नाराजगी से) बस, तुझको कहा न मेरी शादी कर दे ।

भोलू : किससे करेगा शादी ?

गामा : (भोलू के पाँव दबाते हुए) किसी से भी, बस देखने में अच्छी-खासी लड़की हो ।

भोलू : (व्यंग से) औरत साली बवाले जान, क्या अब वो बवाल नहीं है ?

गामा : (झिझक कर) है तो साली अब भी बवाले जान, पर अगर मेरा ब्याह नहीं हुआ तो मैं पागल हो जाऊँगा ।

भोलू : आखिर हुआ क्या है ?

गामा : यह पूछ कि क्या नहीं हुआ ? इसको कल्लन की तो''' । जब से साले ने टाट लगाकर ऊपर सोने का इन्तजाम किया है तब से सारी कालोनी को हवा लग गई है, जिधर देखो टाट के पर्दे लटके हुए हैं और पर्दों में'''किसी की धोती कहीं पड़ी है तो किसी का तहमद कहीं । बच्चे पड़े रो रहे हैं मगर साला फ़ौजी अपने काम में लगा है । कल्लन तो साला रात भर

बकवास करता है और उसकी बीवी की ज़ुबान तो तालू से लगती ही नही है। दायें-बायें जिधर भी नज़र डालो, कुछ न कुछ हो रहा होता है। अजीब-अजीब आवाज़ें आती है, ऐसे मे नींद क्या आएगी ? खाक !

[भोलू तेज़ी से हंसता है]

: हँस मत, यहाँ जान के लाले पड़े हैं और तू···

भोलू : (हंसते हुए) ठीक है, ठीक है, मैं सब समझ गया, वाह रे कल्लन तू तो जादूगर···

गामा : जादूगर की ऐसी तैसी, तू मेरी शादी कर दे।

भोलू . अरे भाई शादी क्या कोई रोटी है जो तुझे उठाकर दे दूँ, घन्नो से बात करूंगा।

[गामा चापलूसी में जल्द से एक कुल्हड दारू भोलू को देता है। स्वयं दो कुल्हड़ पीता है और भोलू के पैर दबाता है।]

[राघू, जंगली और मकसूद आते है। अब तक गामा नशे में आ चुका होता है।]

राघू : वाह, आज तो दोनो भाई पहले से ही जमे है।

जंगली : अबे भोलू आज कौन पिला रहा है।

मकसूद : भोलू क्या बात है आज तो गामा की बोलती बन्द है ?

भोलू : कुछ नही, भाई हम लोगो की बिरादरी मे शामिल होना चाहता है।

गामा : (धमकी देते हुए) भोलू।

जंगली : साफ साफ़ बता भोलू, बात कुछ समझ में नही आई।

भोलू : साफ बात ये है कि गामा अब शादी करना चाहता है।

[सब लोग झटके से पीछे गिर जाते हैं और आपस में गड्डमड्ड हो जाते है।]

जंगली : (उठते हुए) अबे भोलू, ज्यादा चढ़ गई है तो घर जा।

भोलू : अबे जूती चोर, मैं चढ़ने लायक नही पीता। गामा को अब

सचमुच औरत की जरूरत है।

जंगली : (हँसते हुए) औरत साली बवाले जान।

[गामा सकपकाता है, उसे सकपकाते देखकर]

मकसूद : बवाले जान, औरत साली (हँसता है)।

राघू : (गामा को कोंचते हुए) साली औरत, जाने बवाल।

भोलू : अबे ओ ऽ ए मार बैठेगा।

(सब डर कर दूर हट जाते हैं ?)

जंगली मगर हुआ क्या ?

भोलू : हुआ क्या है, सब कल्लन की मेहरबानी है।

जंगली :
राघू :
मकसूद : } (आश्चर्य से) कल्लन की मेहरबानी ?

भोलू : हाँ, कल्लन की मेहरबानी, भाई कल्लन ने तो जादू कर दिया है, जिस काम को मैं और धन्नो सात साल में नही कर पाए, कल्लन ने उसे यूँ कर दिया।

राघू : (झुंझलाकर) भोलू साफ बात कर।

भोलू : साफ बात यह है कि भाई को आजकल नीद नही आती। सारी सारी रात जागता है, कहता है कि हर तरफ कुछ न कुछ हो रहा होता है। सबसे ज्यादा परेशानी इसे कल्लन की बीवी की जुबान और फौजी के तहमद से है।

जंगली : वाह रे गामा, बडे मुकद्दर वाले हो, सारी रात मजा लेते हो।

मकसूद : (गामा के कन्धे पर हाथ मारकर) मियाँ मुफ्त मे फिल्म देखते हो!

राघू : हाँ भाई, कल्लन अपनी बीवी से क्या बात करता है !

जंगली : (पुचकार कर) अब बता भी दो यार, हमसे क्या पर्दा ?

गामा : (गुस्से से परन्तु लड़खड़ाते हुए) भोलू ! मैंने तुझसे इसलिए नही कहा था कि तू सबसे कहता फिरे।

जंगली : सबसे कहाँ यार, हम तो घर के आदमी हैं।

राघू : (ऐलानिया) सुनो ! सुनो ! कालोनी वालो सुनो ! गजब हो गया,हमारे गामा का पासा पलट गया, भाई को आजकल···

गामा (राघू को खींचकर बैठाते हुए) मेरा मज़ाक मत बनाओ, भगवान कसम ! मैंने भोलू से जो कहा है वह झूठ नही है— मेरी शादी करवा दो।

मकसूद : इसमे शरमाने की क्या बात है ? अब की है तूने मर्दों वाली बात।

राघू : भाई भोलू फिर किससे कर रहा है अपने गामा पहलवान की शादी ?

भोलू · शादी !

राघू . हाँ शादी।

भोलू : (नशे में) किसकी ?

राघू : किसकी ? अबे, (मकसूद से) किसकी ?

मकसूद : हाँ, किसकी ?

जगली : (गामा के पास पहुँचकर उसे पुचकारता है) गामा की !

राघू : अरे हाँ गामा की।

भोलू : ओ···ह, अब कोई अच्छी सी लड़की ढूढ़ूंगा।

जगली : भय्ये, लौडिया बिल्कुल फन्ने खाँ होनी चाहिए।

राघू : और सीधी सादी भी, गामा का मिजाज बहुत तेज है।

मकसूद : राघू तू भी बस पैंदल ही है, औरत सीधी हो या तेज़ सब मिजाज़ झाड़ देती है।

राघू : देखेंगे !

गामा : अबे देखेगा क्या, गामा जैसा है वैसा ही रहेगा। मैं किसी साली के सामने झुकने वाला नही।

जंगली : नाई नाई कितने बाल ?

राघू : (जगली के सर को नीचे झुकाता है, वह राघू और मकसूद के बीच मे उल्टा लटक जाता है) अभी सामने आते है जिजमान !

[सब तेजी से हँसते हैं]

[गायक मण्डली अकस्मात कूद कर मंच पर आती है]

गा.मण्डली : सुनो !
बजवा दो शहर में डंका,
ढूंढ़ कर लाओ एक लडकी ।

मक्सूद : एक लडकी !

राधू : एक लड़की ?

मकसूद : और नही तो दस

भोलू : राधू तू भी बस ।

गा.मण्डली : सुनो !
बजवा दो शहर में डंका,
ढूंढ कर लाओ एक लडकी ।

मकसूद : कैसी हो ?

राधू : अरे भई गामा, कैसी हो ?

जंगली : हेमा कि नूतन, वहीदा ।

भोलू : माला कि नन्दा, जाहिदा ।

सब : बोलो तो कैसी हो ?

मकसूद : हाँ भई गामा कैसी हो ?

राधू : न छोटी हो, न मोटी हो
न गोरी हो, न काली हो,

राधू : यारो सबसे अलग गामा की घरवाली हो ।

गा.मण्डली : सुनो !
बजवा दो शहर में डंका,
ढूंढ कर लाओ एक लड़की ।
[गायक मण्डली गाते हुए चली जाती है]

मकसूद : भोलू तूने राजे कलईगीर की लड़की देखी है । क्या नाम है उसका ?

राघू · (उत्साह से) राजकली ! बहुत अच्छी लड़की है। मेरी घरवाली ने अपने भाई के लिए बात चलाई थी मगर राजे ने मना कर दिया।

भोलू क्यों ? कहीं गामा के लिए भी···

जगली अरे है किसी में हिम्मत कि गामा को हाथ देने से इन्कार कर दे।

भोलू चल गामा उठ, मैं आज ही राजे से बात करूँगा।

अन्धकार

दृश्य सात

[रात का समय, गामा अपने दड़बे को देख रहा है और खुशी के साथ झाड़ पोंछ कर रहा है। उसे अंतिम रूप देने की कोशिश कर रहा है]

गामा . चढ़ जा बेटा सूली पर भली करेंगे राम।

[वह फिर टाट को खोलकर बांधता है। कील ठोंकते समय हथौड़ी उसकी उंगली पर पड़ जाती है]

कल्लन तेरे कीड़े पड़ें तू रडुवा हो जाए कल्लन! तेरी बदौलत मुझे यह सब करना पड़ रहा है।

[वह फिर दड़बे को अंतिम रूप देने की तैयारी करता है। अचानक उसकी विचारधारा बदलती है। काम पूरा करके जैसे स्वप्न लोक मे विचरण कर रहा हो]

नही कल्लन तू जीता रह, फले-फूले। तेरी बदौलत ही मेरे मन मे औरत के लिए जगह पैदा हुई। अब मैं वो स्वाद चखूंगा, जो मैंने कभी सोचा भी न था। अब मेरा भी एक घर होगा। कोई मेरे दुख-दर्द, परेशानी मे हिस्सा बांटने वाला होगा। छोटे-छोटे बच्चे होंगे जो मुझे बाप कह कर पुकारेंगे।

[एक औरत के चीखने की आवाज़ आती है। गामा को स्वप्न भंग हो जाना बहुत बुरा लगता है]

आवाज . नास मीटा रोज दारू पीकर आ जाता है। घर में बीवी-बच्चे भूखे मरते रहें मगर इस मुए को मुई दारू जरूर चाहिए। शायद मेरे बाप की फूट गयी थी जो इस मिटे मारे के पल्ले बांध दिया। इससे तो अच्छा होता कि आंख मीच कर कुएँ मे धक्का दे देता।

[बच्चे के रोने की आवाज आती है साथ ही औरत बच्चे को पीटती है जिससे बच्चा और तेजी से रोता है]

बच्चा : भूख लगी है माँ !

आवाज तो मेरा कलेजा खा ले।

[आवाज बन्द हो जाती है]

गामा . (जिधर से आवाज आ रही थी उधर हवा में लात मारता है) औरत साली बदाले जान।(लौटकर अपने दड़बे तक पहुँचता है)

मगर गलती फौजी की बीवी की नही फौजी की है। जब बच्चो का पेट नही भरता तो क्यो पीता है दारू ?

[विचार धारा की दिशा बदलती है]

मगर दारू की लत भी तो खराब है, साली छूटती ही नही। उफ कितनी घुटन है इसमे, हवा का नामोनिशान तक नही। मगर अब तो इसी मे सोने की आदत डालनी पडेगी।

[लेट जाता है, अचानक जैसे आवाजो का बवडर खडा हो गया हो, चारपाई की चर्र-चूं-चर्र-चूं, सिसकियाँ चुम्बन और बराबर तेज होती साँसो की गति की आवाजे गामा के अस्तित्व को हिला डालती हैं।]

तू बरदाश्त कर पाएगा ये सब गन्दी और घिनौनी आवाजें ? तू खुद भी तो यही आवाजें पैदा करेगा और लोग वह सब देखेंगे और सुनेंगे।

[अर्द्धविक्षिप्त अवस्था मे अपना सब कुछ अपनी बाहों से अपने सीने मे समेटते हुए]

नही-नही मेरा गन्दा घिनावना जो कुछ भी है, मेरा है। किसी को इस बात का हक नही कि वह मेरी आवाजें सुने, मुझे देखे। जब मैं अपनी बीवी के साथ होऊँ।

[चुप्पी]

पर यह मुमकिन कहाँ है ? नीचे एक गन्दी सीलन खाई कोठरी जिसमे भयानक उमस और घुटन है, फिर उस कोठरी पर भोलू और उसकी बीबी का भी उतना ही हक है जितना कि मेरा। मगर मैं उसमे एक पल को नही रह सकता, मेरा दम घुटता है उस दडवे मे। मैं इस बात को सोचकर भी काँप उठता हूँ कि मैं उसमे सोऊँगा।

[चुप्पी]

[लगभग पूर्ण विक्षिप्त अवस्था में]

यह रिश्ता तोड दूँ ? मगर कैसे ? क्या दूसरे मुझे ऐसा करने देंगे ? यह कालोनी वालो की बेइज्जती होगी, वे मुझे मार डालेंगे। भाग जा, भाग जा यहाँ से दूर। तू हाथ का कारीगर है कही भी दो जून की रोटी जुटा लेगा। (सोचने की दिशा बदलती है) मगर राजे पर क्या बीतेगी ? वह एक नेक और शरीफ आदमी है। सब उसकी इज्जत करते हैं। वह इस सदमे को बरदाश्त नही कर पायेगा और खुदकुशी कर लेगा, और''' और ''राजकली का क्या होगा, बिना बाप की लडकी का क्या होगा ? तो फिर मैं क्या करूँ ?

[चुप्पी के बाद स्वय को तसल्ली देते हुए]

चल होने दे जो होता है, तू अकेला तो नही है। तेरे जैसे सैकड़ो मर्द हैं, कुछ तो इससे भी बदतर हालात मे जीते हैं। धूधलिए! अरे हां वो तो सडक के किनारे ही अपनी जिन्दगी गुजार देते है। और तो और उनकी औरतें, बच्चे भी सड़क के किनारे खड़ी, पीतल जडी बैलगाड़ियों मे जनती हैं। तेरे पास तो फिर भी कोठरी है, भले ही उमस और घुटन भरी है। फिर दूसरे ये दडवा भी तो बना लिया है। मैं रात में चुपके से, जब सब सो जाएँगे, तब धीरे से अपनी बीवी को लेकर ऊपर जाऊँगा और सुबह तडके ही नीचे चला आऊँगा।

[गामा के चेहरे पर समस्या का समाधान प्राप्त होने के उप-
रान्त की खुशी है, वह लेट जाता है। प्रकाश मद्धिम होता है]

कोरस : सोचा था गामा ने भइया ब्याह करूँगा कबहूँ नाय,
पर अब वो तो रात-रात भर खाली जागा ही रह जाए।
जो आवाजें सुनता था वो अब वे उससे सुनी न जायं।
और लगे अब उसको ऐसा ब्याह बिना वो रह नहीं पाय।

अन्धकार

दृश्य आठ

[दीनू के भटियारखाने का दृश्य। गामा, मकसूद, कल्लन, राघू और जंगली शराब पी रहे हैं। एक बोतल डाउन राइट में बैठे कल्लन और राघू के बीच रखी है। एक बोतल सेन्टर में बैठे गामा और मकसूद के आगे रखी है। लगभग आधी बोतल डाउन लैफ्ट में बैठे जंगली के आगे रखी है। गामा बीड़ी सुलगा रहा है। अचानक जंगली नशे की तरंग में आ जाता है।]

जंगली : (अलाप लेते हुए) पीने वालों को पीने का बहाना चाहिए।

कल्लन : (सुर और ताल को ताक पर रख कर) पीने वालोंऽऽ पीने का बहाना चाहिए।

मकसूद : अबे चोप्प !

[सब मकसूद को विस्मय से देखते हैं]

(सबसे अलग बेसुरे ढंग से) पीने वालों को पीने का बहाना चाहिए।

[सबके चेहरों पर मुस्कराहट

बहाना चाहिए।

(और तेज स्वर में)

बहाना चाहिए।

[बहुत तेज आवाज में]

बहाना चाहिए।

गामा : पी ले…।

[मकसूद के मुंह में बोतल से शराब डालता है]

मकसूद जी भर के पी ले, आज गामा पिला रहा है। गामा

जो कुछ भी करता है दिल खोलकर करता है। गामा का दिल दरिया है। पी आज जी भर के पी।

राधू : गामा ?

गामा कल गामा की शादी है।

राधू (थोड़े तेज स्वर में) गामा ?

गामा · कल से गामा घरवाला हो जाएगा।

राधू · (चीखकर) गामा !!

गामा : क्या है, बे ?

राधू . (खिसियाकर) गामा, ये साली दारू भी क्या चीज है ?

जंगली : क्यो चढ गई क्या ?

राधू · (बोतल उठाकर) हाँ चढ गई, पूरी की पूरी चढ गई, (जाते हुए) अब मैं घर जाऊँगा।

कल्लन · अबे बैठ (राधू को हाथ पकड़कर बैठाता है) गामा अब तो बस आज की रात बाकी है, कल से तो तू हमारी बिरादरी मे शामिल हो जाएगा।

जंगली : (शीघ्रता से) औरत साली ववाले जान।

[अत्यन्त गम्भीरता से उठने का प्रयत्न करता है परन्तु नशे की अधिकता के कारण गिर जाता है, गिरते ही ऐलान करता है]

गामा : उठ !

[गामा झटके से स्वयं खड़ा हो जाता है। गामा के ऐलान के साथ ही जगली डरकर मकसूद के पीछे छिपने का प्रयत्न करता है। गामा जंगली के स्थान पर पहुँचता है उसे वहाँ न पाकर चारो तरफ निगाहे दौड़ाता है। राधू और मकसूद के पीछे जंगली को छिपा देखकर उस तरफ बढता है। जगली दौड़कर कल्लन और राधू के मध्य शुतुरमुर्ग की तरह अपनी गर्दन घुसा देता है। गामा तीनो के पास आ जाता है। कालर

पकड़ कर उठाना चाहता है परन्तु नशे की अधिकता के कारण उठा नहीं पाता। तीनो भेडो की तरह गर्दन हिलाकर न'''न कर रहे है।]

गामा : उठ ! अबे मैं कहता हूँ खड़ा हो जा। साले मेरी पी रहे हो और मेरी ही हँसी उड़ा रहे हो।

[कल्लन को उठाते हुए]

तू भी खड़ा हो जा।

[ऍं'''ऍं, न ' न की आवाज तेज हो जाती है]

(ऐलानिया) अब मैं किसी को नहीं पिलाऊँगा, एक बूँद भी नहीं।

राघू : (गर्दन निकाल कर) शाबास ! गामा, ठीक कहा ! ये सब इसी के काबिल हैं

गामा : (राघू का कॉलर पकड़ कर उठाते हुए) मक्खन मत लगा, तू भी खड़ा हो जा, मैं कहता हूँ खड़ा हो जा।

कल्लन : बैठ भई गामा बैठ ! तसल्ली से बैठ !

[गामा को कोने पर ले जाकर बैठाने की कोशिश करता है। वह नहीं बैठता तो जाकर जंगली और राघू को हिकारत की निगाहो से देखता है]

यह जंगली है न एकदम बेवकूफ है।

[फूहड़ो की तरह फुक्का मारकर, छाती पीट पीटकर रोना शुरू कर देता है।]

कल्लन : (रोते हुए) अगर ऐसा न होता तो रोना ही क्या था।

[कल्लन को रोता देखकर राघू भी उसी का साथ देने लगता है। राघू और कल्लन को रोते पाकर मकसूद एक साथ सप्तम सुर मे रोने लगता है। जंगली धीरे से अपनी गर्दन ऊपर उठाता है। बारी-बारी से तीनो को देखता है, रोने का कारण न समझ कर खुद भी साथ देने लगता है।]

कल्लन : (अचानक चीखकर) चुप्प !
चल दे गामा से माफी माँग ।
[जगली स्थिर है]
अबे माफी माँग अपने बाप से !
[जंगली मरे हुए कदमों से गामा के पास पहुँचता है। बिल्कुल बच्चो के अन्दाज में ।]

जगली . अब्बा जान माफ कर दो !
[गामा, जगली के सर पर हाथ फिराता है, फिर बच्चों को प्यार करने के अन्दाज में चूमता है । जंगली गामा की बोतल उठाकर चल देता है । गामा कमर के पीछे हाथ बढाकर बोतल छीन लेता है ।]

कल्लन : गामा ! ये तेरा दारु पीने का आखिरी दिन है ।

जंगली : (आश्चर्य से) आखिरी क्यो ?

राधू : (मस्ती में) कल से गामा शादी-शुदा हो जाएगा ।

मकसूद : तो क्या हुआ ?

राधू : मकसूद खुदा ने तुझे जरा-सी भी अक्ल नही दी, अगर दे देता तो…

जगली : घरवाली चड्डी नही गाँठती…।

मकसूद : (गुस्से से) तुम जान-बूझकर मेरी घरवाली को क्यों बीच में घसीट लाते हो ?

कल्लन : तुम्हें परेशानी होती है ?

मकसूद : (गुस्से से) नहीं होनी चाहिए ?

राधू : जरूर होनी चाहिए, मगर दारू पीते वक्त नहीं ।

मकसूद : तो कह दो इनसे कि दारू पीते वक्त उसे न घसीटा करें ।

राधू : भई ! बात कायदे की है आज से…।

जंगली : कोई भी ।

राधू : किसी की भी ।

कल्लन . घरवाली को।

जंगली : दारु में नही घसीटेगा।

[सब मस्ती में]

नही घसीटेगा, नही घसीटेगा,

नही घसीटेगा, नही घसीटेगा।

[गामा और राघू—मकसूद का हाथ पकड़कर बोलते हुए अपनी-अपनी तरफ बारी-बारी से खीच रहे हैं। अचानक गामा मकसूद का हाथ छोड देता है वह कल्लन के ऊपर गिरता है।]

कल्लन . (प्रतिक्रिया स्वरूप) अबे मकसूद कल, कल घसीटा मिला था। कह रहा था कि अपने उस मकसूदे को समझा देना कि दो दिन के अन्दर-अन्दर मेरा पैसा दे जाए नही तो हाथ-पैर तोडकर खाल मे भुस भर दूँगा।

[मकसूद दौड़कर गामा के पास जाता है। गामा को कुल्हड़ भरके देता है, वह बिना पिये नीचे रख देता है। बीड़ी जलाकर देता है।]

गामा : नही चलेगा।

मकसूद : (पैर दबाते हुए) अब्बा हुजूर।

गामा : *अब्बा गया कब्र मे।*

मकसूद · (चम्पी करते हुए) वो तो मालूम है मगर उसके बाद मैंने तुम्हे ही···

गामा : अब्बा माना है, क्यो ? मगर मेरा कब्र मे जाने का अभी कोई इरादा नही है। अभी मुझे शादी करनी है।

मकसूद : (रिरियाते हुए) गामा ! बस अब तू ही मेरी मदद कर सकता है।

गामा : अच्छा मकसूद, यह घसीटे से कर्ज क्यो लिया था ? बच्चा बीमार था, घर मे रोटी नही थी या जेब मे दारू के पैसे नही

मकसूद : बीवी को पीहर जाना था और घर मे कोई ढग की···।
जंगली : (हंसकर) धोती नही थी।
कल्लन : गामा तू कितनी भी कोशिश कर ले ये लोग कर्ज की आदत नही छोड सकते।
गामा : (रहस्यमय ढग से) कल्लन, एक बात बताऊँ।
कल्लन : हो।
गामा . मैंने लोगो को सुधारना छोड दिया है। समझाया उसे जा सकता है जो समझना चाहे।
कल्लन : बहुत अच्छा किया।
मकसूद : (रोते हुए) तुम सब मेरे दोस्त हो और मेरी खाल में भुस भरते देखते रहोगे, शर्म नही आएगी ?
सब : आएगी, जरूर आएगी।
सौ फीसदी आएगी।
मकसूद : तो फिर ?
गामा : मजा किरकिरा मत कर। कितना रुपया है ?
मकसूद : चालीस।
गामा : कल सवेरे आकर ले जाना।
[मकसूद दौडकर आता है, गामा के पैर दबाता है।]
मगर पन्द्रह दिन मे लौटा देना, समझा ! नही तो मार-मारकर हवाई जहाज बना दूगा।
[मकसूद गामा को उठाने की कोशिश करता है, उठा नही पाता है। बाकी साथियो को इशारे से बुलाता है।]
सब : उ हूँ··· (पीने में मशगूल हो जाते हैं)
मकसूद : (गामा का हाथ उठाकर) गामा पहलवान,
[कोई जवाब नही देता, पीते रहते है]
(स्वय ही) जिन्दाबाद···
(मरे हुए स्वर में) जिन्दाबाद !

राधू : अबे गामा इसे छोड़ और यह बता कि तू राजे की लौंडिया को देगा क्या ?

गामा : देगा क्या । मैं समझा नही ।

कल्लन : इसका मतलब है कि मुंह दिखाई (पास बैठे राधू का मुंह देखता है) के लिए कुछ खरीदा है तूने ?

मकसूद : कड़े ?

राधू : पायजेब ??

जगली . झुमके ???

गामा . कड़े, पायजेब, झूमके । अबे गामा जो काम करता है दिल खोल कर करता है । अबे ये सब क्या है ? गामा राजकली को ऐसी चीज देगा जो सबसे अलग होगी ।

जगली : वो क्या ?

गामा वह बताने की चीज नही है ।

मकसूद ' यार, हमे भी बता न ।

गामा : नही ।

कल्लन : बता दे न, यार !

गामा : (तेज आवाज में) नही ।

कल्लन : राधू अपने अब्बा से पूछ कि वो क्या देगा राजकली को ?

राधू : अब्बा जान बता दो, न ?

गामा : गामा राजकली को देगा,
(बीडी का कश लेता है, बीड़ी दायें हाथ में लेकर ऊपर उठा कर) खुद गामा !
(सब हंसते हैं)

कल्लन : घटु गई है, साईं मने !

गामा : नही समझे न बेवकूफो ? तुम इन बातो को समझ भी नही सकते । तुम्हारे लिए तो कड़े, पायजेब, झुमके ही सब कुछ हैं । अरे जब तक औरत और मर्द खुद को एक-दूसरे के आगे सारा

का सारा न डाल दें, तब तक ज़िन्दगी मे मजा नही आता। अगर मियाँ बीवी के बीच भी तेरा-मेरा हो तो लानत है। इसमे तो अच्छी रण्डी और उसके यार होते हैं, उनके बीच जो कुछ भी होता है—सीधा-सादा सौदा।

कल्लन : (राघू से) पिलाते-पिलाते आज गामा को ज्यादा ही चढ गई है।

गामा : अबे अब तो मुझ पर वो नशा चढ गया है कि कोई दूसरा नशा चढ ही नही सकता।

[जगली शरारत से गामा के पास आता है। उसकी दोनों टांगों के मध्य से अपना सिर निकालकर]

जगली : वाह रे गामा! आज तू कहाँ से बोल रहा है?

मकसूद : (जगली का कान उमेठते हुए) ऐसी बातें तो, जब कभी रेडियो किसी गलत जगह पर लग जाता है, तब ही सुनाई देती हैं।

गामा : तुम हो ना अक्ल के नाम पर पैदल, तुम्हे तो ऐसा लगेगा ही। अगर ऊपर वाले ने पैदा किया है तो कुछ सोचो समझो। यह क्या कि जानवरों की तरह खाना और हगना और कुछ नही तो…

राघू : अबे हमे ऊपर वाले ने नही, हमारे माँ-बाप ने पैदा किया है।

[सब हँसते है]

कल्लन : गामा तेरा दडबा सारी कालोनी में सबसे मजबूत और अच्छा बना है, और क्या खरीदा है तूने अपनी बीवी के लिए।

गामा : मैंने एक नई सुराही और कांच का गिलास लिया है। दो नये चादर भी लिये हैं। वैसे तो मेरे पास एक चादर था पर बहुत गदा था और जगह-जगह फट भी गया था।

मकसूद : गामा कल फूलों वाले दो गजरे भी खरीद लेना फूल देखते ही औरत खुश हो जाती है। (अफसोस) मैं तो अब खरीद ही

नही पाता ।

जंगली : गामा ! कल झण्डे गाढ देना, कही हमारे नाम पर बट्टा न लग जाए ।

कल्लन : तू बेफिक्र रह गामा, मैं तुझे एक से एक कामयाब गुर बताऊँगा ।

मकसूद : गामा आज तूने मुझे दिल खोलकर पिलायी है तो कल मैं भी तुझे जलेबी वाला दूध दे जाऊँगा—(शरारत से देखता है) बाद मे तुझे जरूरत पडेगी ।

राघू : चलो भाई चलो—अब देर हो रही है ।

(सब जाते है ।)

अन्धकार

दृश्य – नौ

[कुछ लोग सड़क के पास तेजी से आते-जाते दिखाई देते है। गामा की शादी की तैयारी मे उल्लास के साथ भाग-दौड़ कर रहे हैं। भोलू साइक के पास आकर दूसरी तरफ देखते हुए—]

भोलू : अबे ओऽय''' मकसूद, मकसूद अबे ओय कहाँ मर गया ?
[राधू उधर से जाता दिखाई पड़ता है उसे पकड़कर]
तू कहाँ गया था ? इतनी देर से तुझे ढूंढ़ रहा हूँ।
सालो आज तो आदमी की जून मे आ जाओ।

राधू : (जाते हुए) मकसूदे के घर से गामा का कुर्त्ता लेने गया था।

भोलू : अबे, सुन तो।

राधू : (जाते हुए) किसी और को पकड़ मुझे ढेर सारा काम है।

भोलू : जिसको देखो साला सीधे मुंह बात ही नही करता ? अबे गामा का ब्याह है, तो मैं भी उसका बड़ा भाई हूँ।

धन्नो : तुम्हे सुनाई नही देता ?

भोलू : देता है—पूरा-पूरा देता है।

धन्नो : मुझे तो लगता है कि पूरी तरह बहरे हो, इतनी देर से चीख रही हूँ।

भोलू : इसमे नई बात क्या है, वह तो मेरा पुराना काम है।

धन्नो . क्या ?

भोलू : देख अब तू मुझसे झगड़ा बन्द कर दे, तेरी दौरानी क्या कहेगी ?

धन्नो : मैं तुमसे झगड़ा करती हूँ ?

भोलू ' भगवान जाने क्या करती है ?

धन्नो : मैं पूछ रही हूँ कि मैं तुमसे झगड़ा करती हूँ।

भोलू : नही, हरगिज नही।

धन्नो : यह कौन बोल रहा है ?

भोलू : मैं !

धन्नो : इससे पहले कौन बोल रहा था ?

भोलू : कोई नही, यहाँ तो कोई है ही नही।

धन्नो : बनो मत।

भोलू : अरी धन्नो मेरी यह मजाल कहाँ कि तेरे सामने बन सकूँ ?

धन्नो : अब बोलो मैं तुमसे झगड़ा करती हूँ ?

भोलू : धन्नो आज गामा की शादी है—

धन्नो : है तो मैं क्या करूँ ?

भोलू : अरी सुन तो, गामा की घरवाली दुल्हन बनकर घर में आएगी, (शरारत से) थोड़ी देर के लिए वो वक्त याद कर जब तू भी दुल्हन बनकर इस घर मे आई थी।

धन्नो : उसी दिन को तो रो रही हूँ।

भोलू : (घबड़ाकर) रो मत, रोने को तेरे दुश्मन (खुद के लिए इशारा करता है) क्या कम है ? हाँ बोल क्या कह रही थी ?

धन्नो : हरिया की कमीज लाए ?

भोलू : अरे ! वह तो भूल ही गया, अभी लाता हूँ। (जाने लगता है)

मकसूद : भोलू, अरे भोलू ?

भोलू : अभी आता हूँ।

मकसूद : अरे सुन, गामा बुला रहा है बहुत जरूरी काम है।

भोलू : (वापस अन्दर जाने लगता है) मैं अकेला क्या करूँ, क्या नहीं ?

धन्नो : कमीज !

भोलू : (झटका खाकर) ला दूंगा मेहरबान ! बारात से पहले ला दूंगा। [गामा नये कपडे पहनकर विंग से बाहर निकलता है, पीछे से समवेत सुरो मे]

बन्ना आया अंधेरी रात रोशनी बिजली की।

[प्रारम्भ मे बन्ना स्त्री स्वरो मे गाया जाता है, बाद में पुरुष स्वर भी शामिल हो जाते हैं।]

बन्ना आया अँधेरी रात रोशनी बिजली की।

[एक लड़का एक पैट्रोमैक्स सर पर रखकर विंग्स से निकलता है उसके पीछे गामा है और गामा के पीछे भोलू है अचानक धुन किसी तेज़ गाने की हो जाती है शब्द वही रहते हैं।]

बन्ना आया अँधेरी रात रोशनी बिजली की।

[बरातियों में से एक व्यक्ति उल्टे सीधे हाथ-पैर फेंकने लगता है, बीच-बीच में लोग शराब पीते जाते है। सभी किसी प्रचलित फिल्मी गाने की धुन पर उछल-कूद मचाने लगते है।]

रम्बा हो, हो हो, रम्बा हो,

मैं नाचूं, तू नाचे···

[अचानक समवेत स्वरों मे बन्ना पूरी शालीनता के साथ गाया जाता है परन्तु उछल-कूद जारी रहती है।]

बन्ना आया अँधेरी रात रोशनी बिजली की।

[पुनः धुन और शब्द बदलते है]

रम्बा हो···

[बरात तीन बार पूरे मच का चक्कर लगाकर नाचती गाती मच के मध्य मे पहुँचती है। दाईं तरफ विंग्स से समवेत स्त्री स्वरों में]

बन्नी आई अँधेरी रात रोशनी बिजली की।

[सभी बराती शान्त होकर किनारे खड़े हो जाते है राजकली दो-तीन स्त्रियों के साथ जयमाला लेकर आती है। दोनों जयमाला डालते है अचानक गाना शुरू हो जाता है। बराती नाचने लगते हैं]

रम्बा हो, हो···

[मध्य मंच में गामा राजकली के फेरे पड़ने लगते हैं, बराती पुनः शान्त हो जाते हैं। फेरे खत्म होते हैं। पैट्रोमैक्स वाला आगे आगे चलने लगता है उसके पीछे गामा और राजकली हैं।]

अन्धकार

दृश्य दस

[गामा के घर मे कोठरी। राजकली सिकुड़ी हुई बैठी है, गामा बीड़ी पी रहा है, घंटाघर से नौ बजने की आवाज आती है। गर्मी की वजह से दोनो का बुरा हाल है। गामा बीच-बीच में पखा झलता जाता है। इस बीच गामा बार-बार राजकली को देख रहा है। समझ नही पा रहा है कि बात कैसे शुरू करे। राजकली भी चोर निगाहो से गामा को देखती है।]

गामा . (अचानक) गर्मी लग रही है?
[बोलकर तुरन्त चुप हो जाता है, पखा तेजी से झलने लगता है। राजकली खामोश रहती है, खामोशी गामा को परेशान करती है।]

गामा : (पस्त) कुछ बोल ना।
[चुप्पी]
[एकाएक डाँटकर]
तू बोलती क्यो नही?

राजकली : (डरकर सकपकाते हुए) क्या-क्या बोलूँ?

गामा : (बड़बड़ाकर) हाँ हाँ क्या बोलेगी।
[उठकर उधर-उधर टहलता है अचानक डाँटते हुए]
कुछ बात कर ना।

राजकली : (घबड़ाकर खड़ी हो जाती है) मैं···मैं

गामा : मैं तुझ पर बेकार ही बिगड़ रहा हूँ। मैं खुद नही जानता कि क्या बात करूँ? ऐसे में तू क्या बात करेगी औरत है न···
[राजकली खामोश है। गामा उत्साह के साथ घूमकर]
सुन मैं तुझे पसन्द हूँ?
[खामोशी]

बोल !

[राजकली खामोश है]

यह शादी तेरी मर्जी से हुई है ?

[खामोशी]

[डांटकर] जवाब दे।

[राजकली रोने लगती है ।]

(घबड़ाकर) अरे रे-रे तू-तो रोने लगी, मैंने तुझे डांटा थोड़े ही है, चुप हो जा !

[हाथ बढ़ाता है, फिर एकदम से हाथ पीछे खींच लेता है,जैसे करंट लगा हो। खड़ा हो जाता है। समझ नहीं पा रहा है कि उसे किस तरह चुप करे ।]

अरे चुप होजा भई, चुप हो जा।

[एक कदम आगे बढ़कर]

देख किसी औरत से इस तरह बात करने का मेरा पहला चानस है। तेरी कसम मुझे बिलकुल नहीं मालूम कि औरतों से इस तरह की बातें कैसे की जाती हैं ?

[नजदीक पहुँच कर उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए]

देख ! मेरी किसी बात का बुरा नहीं मानना, मैं दिल का बहुत साफ आदमी हूँ, अब चुप हो जा।

[राजकली के शान्त होने पर उसे पकड़ कर बैठाता है। स्वयं भी पास ही बैठता है]

ऐ मैं तुझे पसन्द हूँ—न ?

[राजकली सिर हिलाकर हाँ करती है]

गामा : (प्यार से) अरी मुंह से बोल—न ?

राजकली : यहाँ बहुत गर्मी है।

गामा : फिक्र न कर—मैंने ऊपर छत पर नये टाट लगाकर नया दड़बा बनाया है, नये चादर भी बिछाये हैं। एक नई सुराही और

काँच का गिलास भी खरीदा है। तेरे आने की खुशी में सारे घर का रंग ही बदल डाला है।

[गामा बीड़ी सुलगा कर एक कश लेता है।]

राजकली : बीड़ी मत पियो, मुझे उल्टी हो जायेगी।

[गामा राजकली को अर्थ पूर्ण दृष्टि से देखता है जैसे पूछ रहा हो कि मेरी स्वतन्त्रता का हनन इस तरह होगा, मजबूरी में बीड़ी फर्श पर मसल कर बुझा देता है।]

गामा पीहर में तू छत पर सोती थी ?

[राजकली सिर हिलाकर हाँ का सकेत करती है]

गामा : (गुस्से से) अरे मुँह फूटे से बोलना, ढाई घड़ी का सिर हिला रही है, छटाँक भर की जुबान नही हिला सकती।

[राजकली फिर रोने लगती है, उसके रोने से गामा घबड़ा जाता है]

गामा . अरे—रे—रे तू तो फिर रोने लगी।

[रोना तेज हो जाता है]

अब-अब क्या बात है ?

[राजकली का रोना और तेज हो जाता है। गामा घबड़ाकर एकदम दूर हो जाता है]

आखिर बात क्या है ?

राजकली . (सुबकते हुए) तुम मुझे डाँटते क्यो हो ? मेरे बाप ने भी मुझे कभी नही डाँटा।

गामा : (पलटकर) वो तेरा बाप था।

राजकली : (शरारत से) और तुम मेरे !

गामा : मैं—तेरा ?

राजकली : तुम-तुम तो मेरे, मेरे···

गामा : हाँ, हाँ मैं तेरा ?

राजकली : मुझे शर्म आती है।

गामा : काय में ?
राजकली : बताने मे।
गामा : तो मत बता।
[बीडी सुलगाता है]
राजकली : (शिकायत से) बीडी···!
[मजबूरी में बीडी फेंक देता है, कुछ नाराज सा लगता है]
राजकली : बताऊँ!
गामा : क्या ?
राजकली : वही बात !
गामा : क्या बात ?
राजकली : वही, तुम मेरे (शरमा जाती है)।
गामा : हाँ, हाँ मैं तेरा
राजकली तुम मेरे वो हो।
गामा (हताश होकर) वो क्या ?
राजकली : वो, वो यानी कि, यानि सनम हो।
गामा : ओ···हो···हो,
हाँ,
पीहर मे तू छत पर सोती थी ?
राजकली : हाँ।
गामा : खुली हवा मे ?
राजकली : हाँ।
गामा : सोता तो मैं भी छत पर हूँ पर अब तो टाट के दड़बे में सोना पड़ेगा।
राजकली एक बात पूछूं ?
गामा . पूछ।
राजकली : नाराज तो नही होंगे !
गामा : अगर नाराजगी की बात होगी तो जरूर होऊँगा।

[राजकली चुप हो जाती है। गामा महसूस करता है कि उसने गलत जवाब दिया है।]
क्या पूछ रही थी ?

राजकली : कुछ नहीं।

गामा : कुछ तो ?

राजकली : नहीं, तुम नाराज हो जाओगे।

गामा : चल, वायदा करता हूँ कि नाराज नहीं होऊँगा।

राजकली . बिल्कुल भी नहीं ?

गामा : हाँ हाँ जरा भी नहीं।

राजकली : मैंने सुना है···?

गामा · (उत्सुकता से) क्या सुना है ?

राजकली : मैंने सुना है कि···!

गामा · (शीघ्रता से तेज स्वर में) क्या ?

राजकली : (शीघ्रता से) औरत साली बवाले जान।
[गामा राजकली को घूरता है।]

गामा : मैंने इरादा कर रखा था कि शादी नहीं करूँगा, औरत को बवाले जान समझता था। पर पिछले महीने भर से मैं खुद को अधूरा समझने लगा। मुझे लगता था कि कुछ ऐसा है कि जिसकी वजह से मैं खाली हूँ। बहुत सोचा और इस नतीजे पर पहुँचा कि मैं शादी कर लूं तो शायद यह खालीपन भरा जा सकता है।

राजकली : अब क्या समझते हो ?

गामा : (उस पर गहरी दृष्टि डालते हुए) अब ?

राजकली : हाँ।

गामा : (शरारत से) क्या कहते हैं उसे ?

राजकली : किसे ?

गामा : वही जो जान से भी प्यारी होती है।

राजकली : जा···जाली।

गामा : यहाँ बहुत गर्मी है।

राजकली : मेरा दम घुटा जा रहा है।

गामा : अभी चलते हैं, ऊपर छत पर बहुत लोग सोते हैं। सब साले रात भर गंदी-गंदी आवाजें निकालते रहते हैं।

राजकली : (आश्चर्य से) आवाजें !

गामा : वैसे तो यही सब मेरे साथ भी होगा, पर मैं नहीं चाहता कि कोई और इस बात को जाने। तुम मेरी घरवाली हो, हम दोनों क्या करते हैं, कैसे करते हैं, दूसरे यह जानें, यह मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। इसीलिए मैं इन्तजार कर रहा हूँ कि सब सो जायें तब हम ऊपर जायें।

राजकली : तुम कह रहे थे कि टाट का···

गामा : हाँ टाट का पर्दा लगा दिया है, खूब मजबूती से बांध दिया है, टाट भी नया लिया है।

राजकली : तब !

गामा : *टाट का पर्दा भी कोई पर्दा है, जरा सी हवा चली नहीं कि सब* कुछ हिल जाता है। ये साली हवा हम गरीबों के दड़बों तक, आती ही क्यों है ? और फिर सुबह सूरज की रोशनी में रात के काले धब्बे अपनी कहानी कह देते हैं।

राजकली : हवा हमारे दड़बे तक आती है, तभी तो हम जिन्दा हैं। [गामा को उसका ज्ञान अच्छा नहीं लगता। वह बीड़ी सुलगाता है।]

राजकली : बीड़ी।

गामा : हाँ हाँ बीड़ी, धीरे धीरे छोड़ूंगा, अगर छूटी तो।

राजकली : लेकिन मेरा दम···।

गामा : मैं रोज शाम को दारू पीता हूँ।

राजकली : यहाँ बहुत गर्मी है।

गामा चल, ऊपर चल।
[राजकली चलती है तो उसकी [illegible] और चूड़ियों की खन-खनाहट होती है।]

गामा · (सुन) [राजकली रुक जाती है]
ऊपर बहुत सम्भल कर चलना और जमीन पर बहुत आहिस्ता-आहिस्ता कदम रखना।
[गामा और राजकली छत पर पहुँचते हैं। राजकली बहुत आहिस्ता-आहिस्ता सम्भल कर चल रही है। छतों पर पूर्ण नीरवता छायी हुई है। गामा इस नीरवता को देखकर खुश होता है। एकाएक राजकली को ठोकर लगती है। गामा उसे सम्भाल लेता है परन्तु पायलों और चूड़ियों के स्वरों से सारी कॉलोनी में जाग हो जाती है। गामा को लगता है जैसे सब उसी का इन्तज़ार कर रहे थे। वह बेचैन हो उठता है। फुसफुसाहटों और हँसी की आवाज़ों का सिलसिला शुरू हो जाता है। वह तेजी से राजकली को पकड़ कर दड़बे में ले जाता है।
कुछ अन्तराल के बाद आवाजें धीमी पड़ती हैं। गामा दड़बे से बाहर निकलकर देखता है कि सब सो रहे हैं या जाग रहे हैं? आश्वस्त होने पर वापिस पहुँचकर राजकली के कन्धे पर हाथ रखता है। वह संकोच में सिमटती है तो चूड़ियों की आवाज़ रात के सन्नाटे में दूर तक फैल जाती है। गामा आवाज़ सुनकर छिटक कर दूर हो जाता है। माचिस जलने की आवाज़ के साथ रोशनी होती है। गेंदा उठकर पानी पीती है। गिलास और सुराही के टकराने की आवाज़। गामा अपने को इन आवाज़ों के मध्य घिरा और कठिन परिस्थितियों में पाता है और राजकली को भूखी और बेबस निगाहों से देखता है। कुछ सोचकर टाट को ठीक करने लगता है फिर राजकली को आलिंगन बद्ध करने की कोशिश करता है।]

राजकली : उहूँ...।

[गामा को लगता है कि राजकली की आवाज़ सारी छतो पर फैल गई है और फिर स्त्री पुरुषो के स्वर, चारपाई की चर्र, चूं, चर्र चूं, सांसो की तेजी से चढ़ती आवाज़ें उसे सुनाई देने लगती हैं।]

गामा : (राजकली से) सो जा।

[खुद भी लेटकर शून्य मे घूरने लगता है। गेंदा उठकर पानी पीती है तो यह बेचैन हो जाता है।]

नेपथ्य : आज तुम्हारी सुहागरात है ?

गामा : हां।

नेपथ्य : और तुम इस तरह अलग पड़े हो ! तुम्हारी पत्नी क्या सोचेगी ?

गामा : तो मैं क्या करूं ?

नेपथ्य : जो सब करते हैं।

गामा : पूरी कॉलोनी जाग रही है, जैसे मेरे ऊपर आने का ही इन्तज़ार कर रही थी।

नेपथ्य : जागने दो।

गामा : उन सब के कान और आंखे हमारी तरफ लगे हैं।

नेपथ्य : लगने दो।

गामा : कभी-कभी तुम बेवकूफी की बात करते हो, क्या तुम चाहते हो कि जिन्दगी मे कुछ भी ऐसा न हो जिसे मैं अपना कह सकूं। जिसके बारे मे मैं केवल मैं जानता होऊँ।

नेपथ्य : तो नीचे कोठरी मे चले जाओ।

गामा : वहां गहरी उमस, सीलन, बदबू और घुटन है। मैं वहां नही सो सकता।

नेपथ्य : फिर क्या सोचा है ?

गामा : सोचा क्या है, कुछ भी...!

नेपथ्य : तो क्या ऐसे ही !

गामा : हाँ ऐसे ही…
[राजकली करवट बदलती है।]

नेपथ्य : तुम्हारी पत्नी को नींद नहीं आ रही है।

गामा : आ भी कैसे सकती है? आज…

नेपथ्य : आज के लिए उसने न जाने कितने अरमान संजोये थे।

गामा : जानता हूँ।

नेपथ्य : फिर भी बेवकूफी कर रहे हो।

गामा : यह बेवकूफी नही है।
[गामा अलग लेट जाता है।]
यह बेवकूफी नही है।
[धीरे धीरे अन्धकार]
यह बेवकूफी नहीं है।
[प्रकाश राजकली पर आता है वह शून्य में घूर रही है।]

गा.मण्डली : पहली रात बीत गई,
[लाइट्स फ्लक्चुयेट करती है]
अगला दिन गुजर गया
[लाइट्स फ्लक्चुयेट करती है]
फिर तो दिन गुजरन लगे,
हफ्ते भी गुजरन लगे।
[लाइट्स फ्लेक्चुयेट करती है]
फिर महीने बीत गए,
गामा अब पीता बहुत था,
अब वो परेशां बहुत था।
[गामा बोतल लिए आता है, राजकली पर एक निगाह डालता है, उसकी तरफ पीठ करके बैठ जाता है।]

राजकली : दारू पीकर आ रहे हो?

गामा : हूँ।

राजकली : तो वहीं पी लेते, साथ लाने की क्या जरूरत थी ?

गामा : तुम से क्या मतलब ?

[चुप्पी]

राजकली : तुम से एक बात कहनी है।

गामा : बोल।

राजकली : मैं अपने घर जाऊँगी।

गामा : घर ?

राजकली : हाँ, अपने घर !

गामा : यह घर तेरा नहीं है ?

[चुप्पी]

जा।

[चुप्पी]

कब आयेगी ?

राजकली : [गामा को आँखों में झाँककर देखती है जैसे पूछ रही हो कि आकर क्या करूँगी। (शान्त स्वर में) कब आऊँगी ? कब आऊँगी। छत पर, दड़बे के अन्दर, आसपास फैले लोगों का डर और नीचे उमस, सीलन और बदबू। कहीं तो इन्सान समझौता करे। मैं जा रही हूँ इसलिए नहीं कि मैं तुम्हारी मजबूरी नहीं समझ सकती बल्कि इसलिए कि मर्द हर तरह मर्द होते हुए भी औरत कुँवारी बनी रहे, सारी-सारी रात पड़े हुए, अनछुयी रहकर आग में जलना मैं बरदाश्त नहीं कर सकती।

[राजकली उठकर चलती है, फिर खड़े होकर गामा पर एक निगाह डालती है, गर्दन को झटका देकर निश्चय की चाल में चली जाती है। गामा वहीं पर बैठा शराब पीता रहता है।]

अन्धकार

[गामा अपने घर के बाहर बैठा बीडी पी रहा है। वह काफी बैचेन है। अन्दर भोलू और धन्नो बैठे है। धन्नो चावल-बीन रही है। भोलू बात शुरू करने का बहाना ढूंढ रहा है।]

भोलू धन्नो !

[चुप्पी]

धन्नो हूँ ?

भोलू · (हिम्मत जुटाकर) धन्नो !

धन्नो : (तेज आवाज मे) क्या है ?

भोल : कुछ नही — कुछ भी नही, हरिया कहाँ है ?

धन्नो · आज धन्धे पे नही जाना क्या ?

भोलू : जाना है, जाना क्यों नहो है। नहीं जाऊँगा तो क्या तू जिन्दा छोडेगी ?

धन्नो : (गुस्से से) हां मेरा पेट ही कुआं है, भरता नहीं, तुम तो फूल सूंघते हो ?

भोलू : (शान्त) तू तो पीछे ही पड़ जाती है।

धन्नो जाओ धन्धे पे जाओ।

भोलू : जा रहा हूँ, तुमसे कुछ बात करनी है।

धन्नो : बोलो !

भोलू : ये गामा को क्या हो गया है ? आज फिर घरवाली को मायके भेज दिया।

धन्नो : मुझसे क्या पूछते हो ? उसी से पूछो न।

भोलू : अरी मेहरबान मैं तो अपने घर मे बात कर रहा हूं। नई-नई शादी, और घरवाली को तिबारा मायके भेज दिया, कहीं ऐसा भी होता है ?

धन्नो : तुम अपना काम करो।

भोलू : कोई न कोई बात जरूर है। जब से ब्याह हुआ है, गामा बड़ा परेशान दिखता है। पहले के गामा और आज के गामा में जमीन

आसमान का फर्क है। पता नही राजकली को गामा पसन्द करता है या नही ?

धन्नो यह बात नहीं है।

भोलू · तो फिर क्या बात है ?

धन्नो तुम अपना काम करो, मेरा मुंह न खुलवाओ।

भोलू क्या मतलब ?

धन्नो . गामा ने राजकली की जिन्दगी बरबाद कर दी।

भोलू : क्या कह रही है तू ?

धन्नो : हां, मैं ठीक कह रही हूं, राजकली ने मुझसे नही अपनी सहेली से कहा है कि गामा···?

[गामा को ऐसा लगता है कि किसी ने उसके कानो मे उबलता हुआ शीशा डाल दिया हो, धन्नो की आगे की बात उसकी चीख मे दब जाती है।]

गामा : नही ! ! !

[गामा दौड़कर ऊपर जाता है और सारे के सारे बांस और टाट उखाड़ कर फेंकने लगता है। आवाजें सुनकर हर तरफ से लोग आते है। 2-3 व्यक्ति गामा को रोकने का प्रयत्न करते है मगर रोक नही पाते हैं। कल्लन गामा द्वारा उखाड़ा हुआ बांस उसके सर पर मारता है इसके बाद तो सभी उसे मारने लगते है। भोलू और धन्नो निस्सहाय से देखते रहते है। गामा सर पर चोट खाकर गिर जाता है।]

अन्धकार

[प्रकाश होने पर गामा बैठा चारों तरफ पागलों की तरह देखता है अचानक पागल पन का दौरा सा पड़ता है और वह लगातार हंसे चला जाता है।]

मुख्य स्वर : आ···वा···जें

बायाँ, दाँया, कोरस : आ ''वा'''जें

(गामा इस स्वर पर आश्चर्यचकित है)

बायाँ कोरस : (जल्दी जल्दी) आवाजें, आवाजें, आवाजें

आवाजें, आवाजें, आवाजें

दायाँ कोरस : आवाजें, आवाजें, आवाजें

आवाजें आवाजें, आवाजें

[गामा इन स्वरों को समझकर बोलने की चेष्टा करता है परन्तु ऐसा लगता है कि मुँह से स्वर नहीं निकल पा रहे हैं।]

मुख्य स्वर : आ'''वा'''जें

कोरस : आ'''वा'''जें

(इसबार कोरस के स्वर में गामा का भी स्वर मिल जाता है)

अन्धकार

● ●



सआदत हसन मंटो

अपने समय के सर्वाधिक चर्चित और विवादास्पद अफसानानिगार मंटो का साहित्यिक जीवन ला मिज़राब और गोर्की की कहानियों के अनुवाद से शुरू हुआ। मंटो आदमी पर आदमी द्वारा होने वाले अत्याचार के विरुद्ध था। उसने शुरू से ही आदमजात के दुःख-दर्द में निजी दुःख-दर्द महसूस किया।

जितेन्द्र मित्तल

जन्म : 1954, गुलावठी (बुलन्दशहर)

शिक्षा : एम० ए० (अर्थशास्त्र)

हिंदी रंगमंच का जाना पहचाना, नाम 'यायावर' नाट्य संस्थान के अवैतनिक निदेशक। पचास से अधिक नाटकों में अभिनय निर्देशन, पार्श्व रंगकर्म का अनुभव।

रूपान्तरित रचनाएं : नंगी आवाज, बारह सौ छब्बीस बटा सात, लाइसेंस

मौलिक रचनाएं : प्यादा, दो ठग मूखी स्थितियां।